डॉ. राममनोहर लोहिया जन्मशताब्दी

मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ मार्च २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ०३

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦मार्च २०१० ✦वर्ष ६० ✦अंक ३ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	५
अपनी बात: भारतीय अर्थव्यवस्था का नया अध्याय	६
अध्यक्षीय: धार्मिक आयोजनों में सादगी लायें	७
जंतर–मंतर:	
नेपाल की डायरी	८
द रेड कोरिडोर	९
महामंत्री की रपट	१०–१२
यह लोहिया की सदी हो – वेदप्रताप वैदिक	१३–१४
बिहार प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ	१५
दहेज के बल पर ससुराल में इज्जत न पायें – डॉ. नीना अग्रवाल	१६
राष्ट्रीय कुलदेवी शोध संगोष्ठी का शुभारंभ	१७
नये आजीवन सदस्य	१९
कविता: तंबाखु–गुटखा, मदिरा–मांस	१७
नया वर्ष – संतोष बोंदिया	२०
गांव की झलक..... – खुशीराम अग्रवाल, झारखंड	२०
नागपुरी लोकगीत में प्रकृति चित्रण – संजय कुमार षाड़ंगी	२१
क्या हो विवाह की आयु.....? – रिखब चन्द जैन	२३–२४
आधुनिक बैंकिंग एवं बीमा व्यवस्था : रोहित मोदी	२५–२६
आखिर क्या है यह समाज सेवा – बसंत मित्तल	२७
साक्षात्कार आचार्य महाप्रज्ञ से – प्रकाश चंडालिया	२८–२९
डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र को भारतीय ज्ञानपीठ	३०
राजस्थानी विवाह गीत – ओंकार पारीक	३१–३२
युगपथ चरण:	३३–३४
युवक–युवती परिचय सम्मेलन	
माहेश्वरी सभा श्रीरामपुर अंचल	३३
उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन	३३
होली मिलन: मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन	३४
होली मिलन: हरियाणा राजस्थान नागरिक परिषद	३४

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦**संपादक : नंदकिशोर जालान** ✦ **कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी**

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Courses Offered

- MBA, BBA and BCA
- Language Courses: Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, French, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, Korean, Sanskrit and Hindi
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Finance & Accounting
- Australian Diploma in Accounting
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training

Preparatory Courses

- MD, MS, MRCP (Medicine) Part I and DNB Part I
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelims and Main)
- WBCS-Executive and Judicial Services Examination (Prelims and Main)
- Chartered Accountancy (PE-I, PE-II and Final)
- NDA/CDS-UPSC Examinations and SSB Interview (Prelims and Main)
- Diploma in Banking and Finance
- CS (Company Secretary) Courses (Foundation, Intermediate and Final)
- Advocateship

Assistance for Admission to Grodno State Medical University, Belarus

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

चिट्ठी आई है :

फिजूलखर्ची रोके समाज

समाज के लगभग सभी मंचों से बार–बार आह्वान किया जाता है कि हमें फिजूलखर्ची से बचना चाहिए। इसका अर्थ है कि अन्य समाजों के मुकाबले मारवाड़ी समाज में फिजूलखर्ची अधिक है। विवाह–समारोहों एवं सामाजिक समारोहों में तो यह फिजूलखर्ची विशेष रूप से देखी जाती है, जिसका खामियाजा समाज के कमजोर–वर्ग को भुगतना पड़ता है।

फिजूलखर्ची का सीधा मतलब है ऐसी वस्तुओं एंव आयोजनों पर खर्च करना, जिनके बगैर भी काम चल सकता है। शादी–विवाह के अलावा जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ जैसे अवसरों पर अनावश्यक खर्च करने से बचना चाहिये। इन आयोजनों को सबों के द्वारा सादगीपूर्ण तरीके से आनन्दपूर्वक मनाया जा सकता है। पर, आजकल इन कार्यक्रमों को भी भव्य रूप देने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। मध्यम वर्गीय परिवार भी इस दौड़ में शामिल हो रहे हैं। इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण के लिए सामाजिक जागरूकता अत्यंत आवश्यक है तथा इस विषय पर गहन चिंतन की भी आवश्यकता है।

परिचय : श्री राजकुमार केडिया समाज के वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने अनेक अग्रणी संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों का दायित्व कुशलतापूर्वक निभाया है। श्री केडियाजी नागरमल मोदी सेवा सदन, अग्रवाल सभा, रांची, मारवाड़ी सहायक समिति के अध्यक्ष, झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के वरीय उपाध्यक्ष रह चुकें हैं।

मैंने देखा है कि पुरुष वर्ग अक्सर फिजूलखर्ची के लिए महिलाओं को जिम्मेदार ठहरा देते हैं। यह पूरी तरह सच नहीं है। फिर भी, महिलाओं के सहयोग से इस प्रवृत्ति पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है।

आइये हम सभी मिल बैठकर इस समस्या का निदान करें।◆

– राजकुमार केडिया , रांची

राजनीति में योगदान

मारवाड़ी समाज की राजनीतिक उपेक्षा को लेकर समाज के लगभग प्रत्येक मंच पर गहरी चिन्ता व्यक्त की जा रही है। वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था, विभिन्न राजनैतिक दलों की कथनी और करनी में अंतर, अग्रेतर जातियों के दुष्टचार, हमारे दुर्बल सामाजिक संगठन, समाज में राष्ट्रीय, प्रादेशिक तथा जिला स्तर पर सर्वमान्य कुशल नेतृत्व का अभाव, धनबल तथा भुजबल की प्रधानता के अनेक कारण गिनाए जाते हैं। जिसके कारण राजनीति के सिरमौर रहनेवाले मारवाड़ी समाज की दुर्गती हो रही है।

हमें तो समाज का नेतृत्व करने वाला सच्चा समाज सेवी चाहिए। निरंतर संघर्ष करने वाला साहसी व्यक्ति चाहिए। सामाजिक समस्याओं से जूझने वाला जुझारू सूरमा चाहिए। जो समाज के हर तबके के लोगों से मिलकर चलने वाला इंसान होना चाहिए। समाज में लाखों करोड़ों समस्याएं मुँह बाये चारों तरफ खड़ी हैं। समाज की दुख–दुविधाएं दूर करने वाला मसीहा होना चाहिए। तब कहीं जाकर हमें उचित फल प्राप्त होगा।◆

– पवन कुमार भावसिंका, कैन्टोनमेन्ट रोड, कटक

अपनी बात :

भारतीय अर्थव्यवस्था का नया अध्याय लिखना होगा।

– शम्भु चौधरी

एक बात तो साफ हो गई कि भारत की अर्थव्यवस्था भारतीय किसानों के भाग्य पर निर्भर नहीं करती। पिछले दो सालों से माननीय कृषि मंत्री जी ने देश में अनाज की भारी कमी का रोना रो–रोकर खाद्य प्रदार्थों के दाम दुगने से भी अधिक कर दिये। चीनी– ४० से ४५ रुपया किलों बिकने लगी, गेहूँ– १८ से २० रुपये किलों, दाल– १२० रूपये किलो मानो खाद्य प्रदार्थ नहीं कोई सोना–चाँदी हो गया है।

महोदय–महोदयाजी देश के प्रधानमंत्री से लेकर वित्तमंत्री तक अर्थशास्त्री हैं और मुझे यह लिखने में जरा भी संकोच नहीं कि "ये अर्थशास्त्री नहीं कुछ और ही हैं"। माननीय कृषिमंत्री को जब यह पता चला कि पंजाब में गत दो सालों से लाखों टन गेहूँ सरकारी गोदाम के खुले आसमान के नीचे पड़ा–पड़ा सड़ चुका तो बोलने लगे कि हम पता करेंगे। सफाई में कहते हैं कि आप कोई अर्थशास्त्री नहीं हैं, परन्तु अनाजों की दामों में बेहताशा वृद्धि के लिए जिम्मेदार शास्त्री तो जरूर हैं हमारे कृषि मंत्री जी।

> **हमारी अर्थव्यवस्था क्रेडिट कार्ड से नहीं चलती। हमारी अर्थव्यवस्था किसान के खलिहान में भरे अनाज से चलती है। देश की अर्थव्यवस्था को टैक्स लादकर सुधारा नहीं जा सकता देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए व्यवस्था में सुधार लाने की जरूरत पर बल देना होगा।**

जब तक देश की अर्थव्यवस्था दिल्ली के संसद भवन से गुजरती हुई भारतीय रिजर्व बैंक के लॉकरों की ठंडी हवा तक बहती रहेगी यह देश कभी शक्तिशाली नहीं हो सकता। इस देश को आत्मनिर्भर करने के लिए यहाँ की गर्म हवा में देश की अर्थव्यवस्था का नया अध्याय लिखना होगा। अर्थशास्त्री बनने के लिए उन्हें विदेशों की डिग्री नहीं गाँवों में किसानों की समस्याओं का अध्ययन करना होगा। भारतीय अर्थशास्त्रियों को समझना होगा कि आखिर क्या कारण है कि जो किसान सोना पैदा करता है वह आत्महत्या क्यों करता है। भारतीय अर्थशास्त्रियों को यह समझना होगा कि भारत अखिर गरीब कैसे है? जबकि इस देश में आबादी से कई गुणा अधिक उपजाऊ और खनिज सम्पदा से परिपूर्ण भूमि है। इन्फोसीस के साफ्टवेयर से देश की अर्थव्यवस्था बदलने की जगह किसानों की अर्थव्यवस्था को हमें पहले बदलना होगा। चन्द लोगों को समृद्ध बनाने की जगह देश को खुशहाल बनाने की बात हमें सोचनी होगी।

भारतीय अर्थशास्त्री इस बात को समझने का प्रयास करें कि जब किसान दो रुपये प्रति किलो में अपना सारा आलू बेच देता है तो कोल्डस्टोरेज में जाकर वह बीस रुपया किलो कैसे हो जाता है? क्या माँग एवं सप्लाई का अन्तर यहाँ भी लागू होता है। भारतीय अर्थशास्त्रियों को समझना होगा कि पंजाब में जब लाखों टन गेहूँ गत दो साल से खुले आसमान के नीचे सड़ रहा था तो देश में अनाज की कमी का रोना क्यों रोया गया। सात रुपये किलो खरीदा हुआ अनाज कैसे २० रुपया किलो बिकने लगा? भारतीय अर्थशास्त्रियों को यह भी समझना होगा कि यह अनाज किसी अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा तेल व्यापार की तरह ट्रेड नहीं होता फिर इसके दाम कौन और किस तरह बढा रहा है?

हमारी अर्थव्यवस्था क्रेडिट कार्ड से नहीं चलती। हमारी अर्थव्यवस्था किसान के खलिहान में भरे अनाज से चलती है। देश की अर्थव्यवस्था को टैक्स लादकर सुधारा नही जा सकता देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए व्यवस्था में सुधार लाने की जरूरत पर बल देना होगा। परन्तु लगता हैं कि सत्ता की मजबूरी ने माननीय कृषि मंत्री जी के बयानों से समझौता कर लिया है। अन्यथा दामों पर नियंत्रण आसानी से किया जा सकता है।◆

अध्यक्षीय :

धार्मिक आयोजनों में सादगी लायें

– नन्दलाल रूंगटा, अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

इस बात को स्वीकार करने मे कतई संकोच नहीं कि मारवाड़ी समाज एक मूलत: व्यवसायिक समाज है। साथ ही राजस्थानी–हरियाणवीं संस्कृति और धरोहर को बनाये रखते हुए लम्बे समय से मारवाड़ी समाज प्रवासी जीवन यापन करते आया है। प्रवास में रहते हुए भी राजस्थानी–हरियाणवीं समाज में पारम्परिक पहनावे 'ओढ़ना' का प्रचलन आज भी बना हुआ है। समाज की औरतें आज भी धार्मिक आयोजनों को संपादित करने के लिये 'ओढ़ने' का ओढ़ना शुभ मानती है। राजस्थान की संस्कृति में धर्म, साहित्य, शिल्प कला, युद्ध कला, आयुर्वेद चिकित्सा, खानपान–पहनावा और एक सबसे बड़ी बात ''विश्वाशनियता'' जिसके बलबूते मारवाड़ी समाज ने एक प्रकार से पूरे विश्व में अपनी साख कायम की। इसके साथ ही मारवाड़ी समाज एक धर्मभीरू समाज के रूप में भी जाना जाता है। राजस्थान के साथ–साथ देश के हर हिस्सों में जगह–जगह गौशालाओं की स्थापना करना मानो मारवाड़ी समाज के जीवन से जुड़ा हो। आज धीरे–धीरे ये प्रवृति समाज से समाप्त होती जा रही है। कुछ पुराने लोगों ने इस तरह की संस्था को अभी तक बचाये रखा है। परन्तु आज नये वर्ग की उदासीनता के कारण समाज की कई संस्थाएं या तो बन्द हो गई या इसमें उनके रुचि मनोरंजन का कोई ऐसा साधन नहीं जहाँ वे जाकर अपना समय बिता सके। समाज द्वारा स्थापित सैकड़ों चिकत्सालय, पुस्तकालय बन्द होने के कगार पर हैं। हालांकि हम आज की जरूरतों के अनुसार इन जगहों का आधुनिकीकरण कर सकते हैं, परन्तु समाज के पास इन सबके लिये न तो धन है न ही सोचने के लिये वक्त।

हाँ! इसके लिये हम लोग ही दोषी माने जायेंगे। समाज में कई संस्थायें हमें ऐसी भी देखने को मिली हैं जिसमें लोग उम्र के अन्तिम पड़ाव में खड़े होकर भी सक्रिय बने हुए हैं परन्तु इनकी सक्रियता समाज के युवकों को सामने आने के लिये प्रोत्साहित नहीं कर पा रही है। परिणाम स्वरूप समाज के युवकों में इन संस्थाओं के प्रति रुचि कम होने लगी है। आज हमें यह सोचना पड़ रहा है कि करोड़ों की इन संपदाओं की भविष्य में देखभाल करेगा कौन? और करेगा भी कि नहीं? यह एक प्रश्न समाज के सामने उभरने लगा है।

इन दिनों देश में प्रवचन और कीर्तन–जागरणों का एक नया दौर सा आ गया। मारवाड़ी समाज भी इससे अच्छूता नहीं है। समाज में धार्मिक प्रवृति होने के चलते भी आये दिन बड़े–बड़े आयोजन होने लगे। इसमें कहीं कोई बुराई भी नहीं है। धर्म के प्रचार–प्रसार में मारवाड़ी समाज शुरू से ही अपनी अग्रणी भूमिका निभाता आया है, आगे भी निभाता रहेगा। पर यहाँ भी समाज आडम्बर और धन का प्रदर्शन करने लगे, फिजूलखर्ची करने लगे तो यह धर्म की आड़ में समाज का भौंड़ा प्रदर्शन ही कहलायेगा । यहाँ किसी विशेष समारोह की चर्चा न कर आम तौर पर इस तरह के आयोजनों में सादगी रखने की आप लोगों से मैं अपील करना चाहता हूँ। हम यह जानते हुए कि कुछ लोग अपने पास से धन खर्च कर इस तरह का आयोजन करवाते हैं, साथ ही कुछ धार्मिक संस्थाएं समाज से धन एकत्रित कर के बड़े–बड़े आयोजन करवाती है। इस तरह के आयोजनों से आपकी–हमारी श्रद्धा बढ़ती भले ही हो परन्तु इससे समाज का कहीं कोई भला नहीं होगा। हम चाहते हैं कि आप ध ार्मिक आयोजनों में जरूर हिस्सा लें परन्तु जिस तरह से धन को वहाँ पानी की तरह बहाया जाता है उस धन से समाज का कोई भला कार्य आयोजित भी किया जा सकता है। जैसे धर्म के नाम पर संग्रहीत धन से कोई शिक्षण संस्था भी खोल सकते हैं या फिर लाचार व्यक्तियों के इलाज पर भी इस धन का उपयोग किया जा सकता है।◆

जंतर–मंतर :

नेपाल की डायरी

– सीताराम शर्मा

- **गिरिजाप्रसाद कोइराला का निधन**
  नेपाल की राजनीति के एक ऐतिहासिक अध्याय की समाप्ति
- ***"द रेड कोरिडोर"*** रितु डोकानिया का नव प्रकाशित उपन्यास

भारत–नेपाल सम्बन्धों के संदर्भ में सामाजिक– राजनैतिक जीवन के पहलू

नेपाल के वरिष्ठतम राजनेता, पूर्व प्रधानमंत्री श्री गिरिजाप्रसाद कोइराला के २० मार्च को निधन से पड़ोसी देश नेपाल के एक ऐतिहासिक अध्याय की समाप्ति हो गयी। ८७ वर्षीय कोइराला भारत के एक विश्वस्त मित्र ही नहीं थे साथ ही नेपाल में गणतंत्र की नींव मजबूत करने में इनकी अहम भूमिका रही है। माओवादियों के साथ हुए एतिहासिक शांति समझौते के श्री कोइराला प्रमुख शिल्पी थे। करीब एक दशक से सशस्त्र संघर्ष को समाप्त कर माओवादियों को मुख्यधारा की राजनिति में लाने तथा शांति प्रक्रिया की अगुवाई में श्री कोइराला की मुख्य भूमिका थी। नेपाल में २४० साल से चली आ रही राजशाही को दो साल पहले समाप्त कर एक गणराज्य में तब्दील करने में भी श्री कोइराला की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री गिरिजाप्रसाद कोइराला के साथ एक पल

नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कोइराला राजनैतिक परिदृश्य में भारतीय नेतृत्व के करीबी समझे जाते थे। श्री कोइराला की जनता की नब्ज पर बड़ी मजबूत पकड़ थी एवं बदलते माहौल में उन्होंने अपनी तथा अपनी पार्टी की सोच में बदलाव किया था। वयोवृद्ध श्री कोइराला को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर जनता का सम्मान एवं प्यार मिला था।

उनकी मृदुभाषिता, सरलता एवं दयालू स्वभाव ने उनकी लोकप्रियता को कभी कम नहीं होने दिया एवं नेपाल की जनता ने उन्हे पाँच बार देश का प्रधानमंत्री निर्वाचित किया। मुझे उनसे दो–तीन बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अक्टूबर १९९३ में सयुंक्त राष्ट्र संघ दिवस के उपलक्ष में आयोजित काठमांडू में एक भव्य समारोह में प्रधानमंत्री श्री कोइराला उद्घाटन के लिये

पधारे। मैं विश्व संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था के एशिया–प्रशान्त क्षेत्रीय निर्देशक की हैसियत से मुख्य वक्ता था। मंच पर बातचीत के दौरान जब उन्हें पता चला कि मैं अपने परिवार के साथ आया हूँ एवं मेरी पत्नी तथा बच्चे भी सभाकक्ष में उपस्थित हैं तो उन्होंने यह कहकर कि बैठक के बाद वे मेरे परिवार से मिलना चाहेंगे, मेरा मन मोह लिया। यह उनका बड़प्पन था। कार्यक्रम के बाद जब उनके सचिव ने सम्याभाव की ओर ध्यान आकर्षित किया तो उन्होने कहा मैं शर्माजी के परिवार से मिलना चाहता हूँ, वे हमारे मेहमान हैं। कहते हुए वे मेरे परिवार से मिले और हंसते हुए कहा कि आप लोग इस मीटिंग में मेरा भाषण सुनकर बोर तो नही हो रहे हैं। मेरी तरफ मुखातिब होते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कल आप सपरिवार मेरे साथ चाय पीयें, मेरा कार्यालय समय निश्चित कर देगा। मेरी १५–१६ वर्षीय पुत्री उनकी सादगी एवं सरलता से प्रभावित होकर मुझसे पूछ बैठी – ये नेपाल के प्रधानमंत्री हैं उनकी सहजता, अनौपचारिकता एवं प्यार ने हम सभी का दिल जीत लिया था।

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

''द रेड कोरिडोर''

मेरे बहुत ही प्रिय एवं घनिष्ठ मित्र तथा सहकर्मी स्वर्गीय लोकनाथ डोकानिया की पुत्रवधू श्रीमती रितु डोकानिया हर बार मुझे अपने गुणों एवं प्रतिभा से आश्चर्यचकित करती है। एक युवा मारवाड़ी पुत्रवधू की इतनी गहरी सोच, विचारों की परिपक्वता एवं स्थितियों के चमत्कारिक विश्लेषण की क्षमता का सुखद परिचय मुझे गत सायं २३ मार्च को उसके नवप्रकाशित उपन्यास ''**द रेड कोरिडोर**'' के लोकार्पण समारोह के अवसर पर मिला।

समाज विकास के मेरे कालम जंतर–मंतर के लिये मैंने मैटर लिख लिया था। जमा करने की तारीख आ गयी थी। लेकिन मैं रितु एवं उसके उपन्यास के विषय में लिखने की तीव्र इच्छा को दबा नहीं सका। सोने के पहले ही १६६ पृष्ठों की किताब पढ़ डाली एवं सुबह विक्टोरीया मेमोरियल से घुमकर आने के बाद तथा कार्यालय के लिये रवाना होने के पहले जो दिमाग में आया वह लिख डाला।

रितु पैण्टिग करती है मैं जानता था। उसकी पहली प्रदर्शनी में भी जाने का अवसर प्राप्त हुआ था, लेकिन लिखती हैं इस विषय में पहली बार कुछ माह पूर्व मुझे उसके पति मधुप ने बताया था। मनीष का मैं आभारी हूँ कि उसने लोकार्पण समारोह में मुझे आमंत्रित किया, नहीं तो मै एक अच्छा अवसर खो देता।

यूं तो द रेड कोरिडोर एक सस्पेंश उपन्यास है लेकिन एक अनबुझी रहस्यमय प्रेम कहानी के माध्यम से भारतीय मूल के नेपालियों का सामाजिक जीवन, उनके राजनैतिक अधिकार, असुरक्षा की भावना, शरणार्थी जीवन, भारत–नेपाल सम्बन्ध, राजनैतिक उथल–पुथल, हिंसा, माओबाद, नस्लबाद एवं नक्सलवाद, जातीय संघर्ष, सीमावर्ती बाशिन्दों के अनिश्चित जीवन के उतार–चढ़ाव पर एक ऐसा दस्तावेज है जो इतिहासकारों, राजनितिज्ञो एवं मनोवैज्ञानिकों के लिये शोध सामग्री प्रदान कर सकता है।

लोकार्पण समारोह के दौरान मुझे मेरे मित्र स्वर्गीय लोकनाथ डोकानिया की कमी सबसे अधिक खली, जिनको रितु ने अपनी पुस्तक समर्पित की हैं।

रितु डोकानिया, मारवाड़ी समाज की बदलती तस्वीर का एक और उज्जवल उदाहरण हैं। मारवाड़ी समाज अब केवल व्यापारियों एवं उद्योगपतियों का समाज नहीं है। हमारे समाज में लेखक हैं, चित्रकार हैं, कलाकार हैं, वैज्ञानिक हैं – सब हैं जो किसी अन्य समाज में हैं। बधाई।◆

महामंत्री की रिपोर्ट

रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, उपस्थित सभी पदाधिकारीगण एवं विभिन्न प्रांतों से आये पदाधिकारी व सदस्यों को रामनवमी तथा विक्रमसंवत २०६७ नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए मैं अखिल भारतीय समिति की बैठक में आपका स्वागत करता हूँ। आपने यहाँ उपस्थित होकर न सिर्फ हमारा उत्साह बढ़ाया है बल्कि समाज, संगठन एवं सम्मेलन के प्रति अपना लगाव प्रदर्शित किया है। इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ।

१३ सितम्बर २००९ को अखिल भारतीय समिति की बैठक भारतीय सांस्कृतिक संसद सभागार, साल्टलेक, कोलकाता में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सफल आतिथ्य में सम्पन्न हुइ थी। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सम्मेलन को सांगठनिक व आर्थिक रूप से और मजबूती प्रदान करने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि प्रत्येक मारवाड़ी परिवार से एक व्यक्ति को सम्मेलन से जुड़ना चाहिए। आपने राजस्थानी–हिन्दी– अंग्रेजी शब्दकोष के प्रकाशन की इच्छा जताई। विवाह समारोह में मद्यपान, सड़कों पर नाच–गान, तलाक परिवारों में टूटन, शादी–विवाह में बढ़ते आडम्बर पर चिंता जताई और अंकुश लगाने की जरूरत पर बल दिया। उसके बाद सम्मेलन द्वारा किये गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया।

सम्मेलन के वर्तमान सत्र की तृतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक बुधवार, ७ अक्टूबर २००९ को हिन्दुस्तान क्लब के गैलेक्सी हॉल, कोलकाता में सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा ने बताया कि एक–दो प्रान्तों को छोड़कर सभी जगह चुनाव हो गये हैं, जहां नहीं हुए हैं उन्हें पत्र भेजा गया है।

३० अक्टूबर २००९ को उच्च शिक्षा समिति की बैठक समिति के अध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल की अध्यक्षता में उनके कार्यालय में हुई। बैठक में उच्च शिक्षा के लिए सहयोग हेतु आये हुए तीनों आवेदन पर विचार विमर्श किया गया। अंत में सर्वसम्मत्ति से यह निर्णय लिया गया कि जो आवेदन आये हैं उनमें से कोई भी आवेदन विचार करने के योग्य नहीं है। आगामी दिनों में आने वाले आवेदनों हेतु सम्मेलन की भूमिका तय की गई तथा अपील की सार्थकता तय करने हेतु नियम तय किये गये। इसके अलावा उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों से ५ लाख २३ हजार रूपयों के सहयोग का आश्वासन प्राप्त हुआ। बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि फिलहाल सम्मेलन उच्च शिक्षा का अपना कोई कोष नहीं बनायेगा और सहयोगी की भूमिका का निर्वाह करता रहेगा। बैठक में यह निर्णय हुआ कि उच्च शिक्षा से सम्बन्धित आवेदन आने और समिति की बैठक में उन आवेदनों के खरा उतरने पर कमिटमेंट किये सदस्यों से सम्पर्क कर आवेदनकर्ता को सम्मेलन के माध्यम से सहायता उपलब्ध करवाई जायेगी। जो आवेदन आयेंगे उनमें देखा जायेगा कि आवेदनकर्ता ने बैंक से लोन लिया है कि नहीं और अगर लिया है तो कितना लिया है, उसने अपने पास से कितने रुपये दिये हैं तथा क्या उसको वास्तव में इस हेतु रुपयों की जरूरत है। इसके अलावा इंस्टीच्यूशन,जहां छात्र या छात्रा ने दाखिला लिया है उसके सम्बन्ध में भी जांच पड़ताल की जायेगी।

३० अक्टूबर २००९ को कोलकाता में स्थायी समिति की चतुर्थ बैठक हुई। बैठक में अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने बताया कि सम्मेलन को आयकर की धारा १२एए, का प्रमाणपत्र मिल गया है। सम्मेलन भवन का अमलगेशन हो गया है। केन्द्रीय कार्यालय की मरम्मत का कार्य मकान मालिक से कोई समझौता न हो पाने की वजह से रुका हुआ है। आपने बताया कि राजनैतिक चेतना से सम्बन्धित कार्यक्रम करने हेतु प्रत्येक प्रान्त को पत्र दिया गया है।

३१ अक्टूबर २००९ को वृद्धाश्रम एवं टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी हॉल, कोलकाता में किया गया। जिसमें अध्यक्ष ने हमारे समाज की संस्कृति में वृद्धाश्रम की सोच को नकारा।

२१ नवम्बर २००९ को होटल विक्ट्रैस, १बी, विक्टोरिया टैरेस, कोलकाता–१७ में संविधान संशोधन कमेटी की बैठक

कमेटी के अध्यक्ष श्री नन्दलाल सिंहानिया की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार व संयुक्त महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार व श्री संजय हरलालका, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कमल नोपानी, पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर हरलालका, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ व सचिव श्री विजय केड़िया, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, पूर्व महामंत्री श्री रतन शाह सहित कमेटी के अन्य सदस्य उपस्थित थे। बैठक में एकल सदस्यता, सभी प्रान्तों में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नाम से कार्य करने सहित संविधान की अन्य कई धाराओं में संशोधन पर सदस्यों ने अपने विचार रखे।

सम्मेलन का ७४वां स्थापना दिवस २५ दिसम्बर २००९ को कोलकाता के विद्यामंदिर सभागर में मनाया गया तथा कौस्तुभ जयंती समारोह का शुभारंभ भी हुआ। समारोह का उद्घाटन सुप्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी श्री बसंत कुमार बिड़ला ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस मौके पर प्रधान अतिथि डॉ.श्रीमती सरला बिरला ने कहा कि सम्मेलन, सामाजिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में विगत ७४ वर्षों से सेवा कार्य करता आ रहा है। सभी क्षेत्रों में आशातीत सफलता भी मिली किंतु इसको और सशक्त करने की जरूरत है। डॉ. बिरला ने कहा कि सरकार के आर्थिक उदारीकरण से लोगों के पास पैसा बहुत आया है इसका सदुपयोग होना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपनी भाषा तथा संस्कृति की पहचान बनाए रखने की जरूरत है। इस आडम्बर में हम अपनी भाषा भूल रहे हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री नन्दलाल रूंगटा ने समाज के हर परिवार से एक–एक आदमी को सम्मेलन का सदस्य बनाने का अनुरोध किया। आप लोगों ने समाज की एकता पर विशेष जोर दिया और कहा कि परिवार में टूटन एवं तलाक की बढ़ती प्रवृत्ति कैंसर का रूप धारण कर रही है इस पर रोक लगाने के लिए आप सभी के सहयोग की जरूरत है। आपने कहा कि राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल कराने की तो हम मांग कर रहे हैं किन्तु उसके पूर्व हमें अपने घरों में राजस्थानी में बात करने की आदत तो डालनी चाहिए। इस अवसर पर समाज के वयोवृद्ध समाजसेवी श्री पुष्करलाल केड़िया का अभिनन्दन किया गया। इस मौके पर बिड़ला दम्पत्ति ने सम्मेलन को ११ लाख का अनुदान देने की घोषणा की। जो कि हमें प्राप्त हो चुका है। इस राशि को फिक्स डिपाजिट करा दिया गया है।

सम्मेलन के वर्तमान सत्र की चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक ९ जनवरी २०१० को माहेश्वरी भवन, गुवाहाटी, असम में पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में अध्यक्ष ने कहा कि कोई भी संस्था मनुष्य से बड़ी होती है। इसलिए संगठन को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना जरूरी है जिससे कि संस्था इस मामले में किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर न रहे। इसके लिए आपने अधिकाधिक लोगों से संरक्षक, आजीवन व विशिष्ट सदस्य बनने का अनुरोध किया। आपने कहा कि सम्मेलन ही एकमात्र ऐसी संस्था है जिसमें उपजाति बोलकर कुछ नहीं है। मारवाड़ी यानि मारवाड़ी। आपने सदस्यों को बताया कि सम्मेलन के सदस्यों की डायरेक्टरी ३१ मार्च २०१० तक प्रकाशित करने का प्रयास है।

अध्यक्ष ने जगह–जगह परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह आयोजित करने पर बल देते हुए कहा कि यह समय की मांग है। समाज के बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने के सम्बन्ध में आपने कहा कि मेधावी बच्चों को सहायता दिलाने में सम्मेलन सहयोगी की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। आपने समस्त प्रांतो व शाखाओं से अनुरोध किया कि वे समाज विकास में प्रकाशन हेतु प्रत्येक माह की १५–१६ तारीख तक अपने कार्यों की रपट जरूर भेजें।

सम्मेलन के वर्तमान सत्र की स्थायी समिति की पंचम बैठक १८ जनवरी २०१० को सम्मेलन कार्यालय, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता–७ में हुई। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने बताया कि १४ साल बाद स्थायी समिति की बैठक सम्मेलन कार्यालय में हो रही है। बैठक में सम्मेलन के १९३५ से वर्तमान तक के अध्यक्ष तथा महामंत्री की फोटो संग्रहित कर उन्हें एक ही तरह के फ्रेम में मढ़वाने तथा भविष्य में सम्मेलन कार्यालय में लगाने की मंशा जाहिर की। सम्मेलन के ७५वें वर्ष में पूरे देश में ७५ जोड़ों का सामूहिक विवाह करवाने की बात भी आपने कही। इसके अलावा इस वर्ष ७५०० नये सदस्य बनाने हेतु आपने सबसे सहयोग मांगा। ७५वें वर्ष में सम्मेलन के सभी सदस्यों को बैच देने पर विचार किये जाने की बात भी आपने कही। आपने कहा कि समाज के लोगों तक सम्मेलन के उद्देश्यों की जानकारियाँ पहुंचाने के

लिए सम्मेलन की वेबसाईट बनाई जा सकती है।

१९ जनवरी २०१० को राष्ट्रीय अध्यक्ष के कोलकाता स्थित कार्यालय में राजस्थानी भाषा सब कमेटी की बैठक कमेटी के चेयरमैन श्री रतन शाह की अध्यक्षता में हुई।

गणतंत्र दिवस व स्वतंत्रता दिवस पर सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने झंडोत्तोलन किया।

३१ जनवरी २०१० को मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन की तरफ से कोलकाता के टेंगरा के खाल धार बस्ती के पास विगत दिनों लगी आग से बेघर हुए १२५ परिवारों के बीच खाना बनाने का स्टोव वितरित किया गाय। इस मौके पर सांसद सुदीप बंदोपाध्याय ने कहा कि सम्मेलन ने बेघर हुए लोगों की सहायता हेतु हाथ बढ़ाकर सराहनीय कार्य किया है। श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सम्मेलन ने बिहार की बाढ़ हो या पश्चिम का आयला तूफान सब समय सहायता का हाथ बढ़ाया है।

सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह कमेटी की प्रथम बैठक ५ फरवरी २०१० को बंगाल रोईंग क्लब में हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कमेटी के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि इस वर्ष पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना है। उन्होंने बताया कि कोलकाता के आमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन के शिलान्यास, ७५ जोड़ों का सामूहिक विवाह, ७५ जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति, शिक्षा, खेल, समाजसेवा, लेखन आदि क्षेत्र में ख्याति अर्जित करने वाले देश के पांच व्यक्तियों को सम्मानित करने की योजना है। इसके अलावा कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को आमंत्रित किया जा रहा है। आपने बताया कि इस वर्ष गुजरात, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तरांचल प्रांत का गठन करने की दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं तथा पूरे देश में ७५०० नये सदस्य बनाने हेतु सदस्यता अभियान चल रहा है। इस वर्ष सम्मेलन के ७५ वर्षों का इतिहास पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना है तथा भारत सरकार से अनुरोध किया जायेगा कि इस मौके पर वह डाक टिकट जारी करे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने कहा कि सम्मेलन की अपनी वेबसाईट शुरु की जायेगी जिसमें सम्मेलन से सम्बन्धी समस्त जानकारियों का समावेश होगा।

६ फरवरी को पूर्व केन्द्रीय मंत्री, राज्यसभा के पूर्व उपाध्यक्ष तथा मारवाड़ी सम्मेलन के हितैषी श्री रामनिवास मिर्धा के निधन पर शोकसभा का आयोजन मर्चेन्ट चेम्बर ऑफ कामर्स हाल, कोलकाता में किया गया। शोक सभा की अध्यक्षता श्री नन्दलाल रूँगटा ने की।

सम्मेलन द्वारा सामाजिक कुरीतियां दूर करने एवं समाज में जागरुकता लाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में २० फरवरी २०१० को दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी हॉल में बढ़ते तलाक – चिंता एवं चिंतन विषय पर आयोजित कंगोष्ठी में एक स्वर में यह बात उभर कर आई कि युवा पीढ़ी में सहनशीलता की कमी की वजह से तलाक बढ़ रहे हैं। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि तलाक के लिए एक ओर जहां पारिवारिक व सामाजिक कारण जिम्मेवार हैं वहीं युवा पीढ़ी में सहनशीलता का हरास होना एक मुख्य कारण है। उन्होंने कहा कि संयुक्त परिवार रहने से सहन करने की शक्ति आती है। किन्तु आजकल एकल परिवार हो गये हैं जहां छोटी सी बात पर सहन शक्ति जवाब दे देती है और तलाक की नौबत आ जाती है। उन्होंने कहा कि तलाक रोकने हेतु न्यायपालिका ने तो कदम उठाने शुरु कर दिये हैं। तलाक को अंतिम विकल्प बताते हुए आपने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन का कार्य अपनी खामियों पर चिंतन करना है।

सम्मेलन के १३वें प्रान्त के रूप में कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नाम से कर्नाटक शाखा का गठन ४ सितम्बर २००९ को हुआ।

कोलकाता नगर निगम में सम्मेलन भवन के पते २५ए और २५बी को लेकर जो समस्या थी उसका निराकरण हो गया है। निगम ने सम्मेलन भवन का नम्बर २५ए, आमहर्स्ट स्ट्रीट निर्धारित कर दिया है।

सम्मेलन को आयकर की धारा ८०जी का प्रमाण पत्र मिल गया है।

सम्मेलन के अभी तक संरक्षक सदस्य १२५ आजीवन ११७ तथा विशिष्ट १३८ सदस्य बने हैं। हमारा लक्ष्य कौस्तुभ जयंती वर्ष में ७५०० नये सदस्य बनाने का है जिसमें आप सबका सहयोग चाहिए। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि अभी तक संरक्षक, आजीवन तथा अनुदान से प्राप्त राशि में से ८६.५ लाख रुपयों का फिक्स डिपाजिट करा दिया गया है। हमारा लक्ष्य फिक्स डिपाजिट का कम से कम १ करोड़ रुपये का है। अभी हम अपने लक्ष्य से कुछ दूर रह गए हैं। आप सबसे निवेदन करता हूं आप सभी मिलकर नये संरक्षक सदस्य बनाने में सहयोग करें जिससे हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। अंत में मैं पुन आप सबको इस बैठक में आने हेतु हार्दिक

धन्यवाद देता हूँ।◆

यह लोहिया की सदी हो

– वेदप्रताप वैदिक

जन्म शताब्दियां तो कई नेताओं की मन रही हैं, लेकिन प्रश्न यह है कि स्वतंत्र भारत में क्या राममनोहर लोहिया जैसा कोई और नेता हुआ है? इसमें शक नहीं कि पिछले ६३ सालों में कई बड़े नेता हुए, कुछ बड़े प्रधानमंत्री भी हुए, लेकिन लोहिया ने जैसे देश हिलाया, किसी अन्य नेता ने नहीं हिलाया। उन्हें कुल ५७ साल का जीवन मिला, लेकिन इतने छोटे से जीवन में उन्होंने जितने चमत्कारी काम किए, किसने किए? जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी से लोहिया का अपने युवाकाल में कैसा आत्मीय संबंध था, यह सबको पता है। लेकिन यदि लोहिया नहीं होते तो क्या भारत का लोकतंत्र शुद्ध परिवारतंत्र में नहीं बदल जाता?

वे लोहिया ही थे, जो नेहरू की दो–टूक आलोचना करते थे। चीनी हमले के बाद लोहिया ने ही नेहरू सरकार को 'राष्ट्रीय शर्म की सरकार' कहा था। उन्होंने ही 'तीन आने' की बहस छेड़ी थी। यानी इस गरीब देश का प्रधानमंत्री खुद पर २५ हजार रुपए रोज खर्च करता है, जबकि आम आदमी 'तीन आने रोज' पर गुजारा करता है। लोहिया ने ही उस समय की अति प्रशंसित गुट–निरपेक्षता की विदेश नीति पर प्रश्नचिह्न लगाए थे और नेहरूजी की 'विश्वयारी' पर तीखे व्यंग्य बाण चलाए थे।

उन्होंने सरकारी तंत्र के मुगलिया ठाठ–बाट की निंदा इतने कड़े शब्दों में की थी कि सारा तंत्र थर्राने लगा था। उन्होंने देश के हजारों नौजवानों में सरफरोशी का जोश भर दिया था। सारे देश में तरह–तरह के मुद्दों पर सिविल नाफरमानी के आंदोलन चला करते थे। राजनारायण, मधु लिमये, रवि राय, किशन पटनायक, एसएम जोशी, लाडली मोहन निगम, जॉर्ज फर्नांडीज जैसे कई छोटे–मोटे मसीहा लोहिया ने सारे देश में खड़े कर दिए थे। कहीं जेल भरो, कहीं रेल रोको, कहीं अंग्रेजी नामपट पोतो, कहीं जात तोड़ो, कहीं कच्छ बचाओ, कहीं भारत–पाक एका करो जैसे आंदोलन निरंतर चला करते थे। लोहिया के आंदोलनों में अहिंसा का ऊंचा स्थान था, लेकिन वे वस्तु की हिंसा यानी तोड़–फोड़ को हिंसा नहीं मानते थे। उन्होंने प्राण की हिंसा करने वाली यानी प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने वाली अपनी ही केरल की सरकार को गिरवा दिया था। लोहिया ने भारत के नेताओं और राजनीतिक दलों को यह सिखाया कि सशक्त विपक्ष की भूमिका कैसे निभाई जाती है? लोकसभा में लोहियाजी की संसोपा के दर्जनभर सदस्य भी नहीं होते थे, लेकिन वहां बादशाहत संसोपा की ही चलती थी। जब लोहिया और मधु लिमये सदन में प्रवेश करते थे तो वह समां देखने लायक होता था। एक करंट–सा दौड़ जाता था। मंत्रिमंडल के सदस्य लगभग 'अटेंशन' की मुद्रा में आ जाते थे और स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के चेहरे पर बेचैनी छा जाती थी।

दर्शक दीर्घा में बैठे लोग कहते सुने जाते थे, वो लो, डॉक्टर साहब आ गए। डॉक्टर लोहिया ने अपनी उपस्थिति से लोकसभा को राष्ट्र का लोकमंच बना दिया। जिस दबे–पिसे इंसान की आवाज सुनने वाला कोई नहीं होता, उसकी आवाज को हजार गुना ताकतवर बनाकर सारे देश में गुंजाने का काम डॉ लोहिया करते। कोई मामूली मजदूर हो, कोई सफाई कामगार हो, कोई भिखारी या भिखारिन हो– डॉ लोहिया उसे न्याय दिलाने के लिए अकेले ही संसद को हिला देते थे। लोकसभा अध्यक्ष सरदार हुकुम सिंह कई बार बिल्कुल पस्त हो जाते थे। मई १९६६ में जब डॉ लोहिया ने मेरा अंतरराष्ट्रीय राजनीति का पीएचडी का शोध–प्रबंध हिंदी में लिखने का मामला उठाया तो इतना जबर्दस्त हंगामा हुआ कि सदन में मार्शल को बुलाना पड़ा। डॉ लोहिया और उनके शिष्यों के तर्क इतने प्रबल थे कि सभी दलों के प्रमुख नेताओं ने मेरा समर्थन किया। इंदिराजी के हस्तक्षेप पर स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज ने अपना संविधान बदला और मुझे यानी प्रत्येक भारतीय को पहली बार स्वभाषा के माध्यम से 'डॉक्टरेट' करने का अधिकार मिला।

डॉ लोहिया के व्यक्तित्व में चुंबकीय आकर्षण था। वे देखने में सुंदर नहीं थे। उनका कद छोटा और रंग सांवला था। उनके खिचड़ी बाल प्राय: अस्त–व्यस्त रहते थे। उनके खादी के कपड़े साफ–सुथरे होते थे, लेकिन उनमें नेहरू या जगजीवनराम या सत्यनारायण सिंह जैसी चमक–दमक नहीं रहती थी। वे सादगी और सच्चई की प्रतिमूर्ति थे। वे जिस विषय पर भी बोलते थे, उसमें मौलिकता और निर्भीकता होती थी। वे सीता–सावित्री पर बोलें, शिव–पार्वती पर बोलें, हिंदू–मुसलमान या नर–नारी समता पर बोलें, अंग्रेजी हटाओ या जात तोड़ो पर बोलें– उनके तर्क प्राणलेवा होते थे। जो एक बार डॉ लोहिया को सुन ले या उनको पढ़ ले, वह उनका मुरीद हो जाता था।

डॉ लोहिया ने अपने भाषण और लेखन में जितने विविध विषयों पर बहस चलाई है, देश के किसी अन्य राजनेता ने नहीं चलाई। सिर्फ डॉ भीमराव आंबेडकर और विनायक दामोदर सावरकर ही ऐसे दो अन्य विचारशील नेता दिखाई पड़ते हैं, जो डॉ लोहिया की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। डॉ लोहिया ने जर्मनी से डॉक्टरेट की थी। इस खोजी वृत्ति के कारण वे हर समस्या की जड़ में पहुंचने की कोशिश करते थे। सप्रू हाउस में उस समय रिसर्च कर रहे डॉ परिमल कुमार दास, प्रो कृष्णनाथ और मेरे जैसे कई नौजवान उनके अवैतनिक सिपाही थे। इसी का परिणाम था कि १९६७ में डॉ लोहिया देश में गैर कांग्रेसवाद की लहर उठाने में सफल हुए। जनसंघियों और कम्युनिस्टों ने भी उनका साथ दिया और देश के अनेक प्रांतों में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकारें बनीं। यदि डॉक्टर लोहिया १०–१५ साल और जीवित रहते तो उन्हें प्रधानमंत्री बनने से कौन रोक सकता था? अब से ३०–३५ साल पहले ही भारत का चमत्कारी रूपांतरण शुरु हो जाता और अब तक वह दुनिया की ऐसी अनूठी महाशक्ति बन जाता, जिसका जोड़ इतिहास में कहीं नहीं मिलता।

जो भी हो, डॉ लोहिया असमय चले गए हों, लेकिन उनके विचार इस इक्कीसवीं सदी के प्रकाश–स्तंभ की तरह हैं। सप्त–क्रांति का उनका सपना अभी भी अधूरा है। जाति–भेद, रंग–भेद, लिंग–भेद, वर्ग–भेद, भाषा–भेद और शस्त्र–भेद रहित समाज का निर्माण करने वाले नेता अब ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते। इस समय सभी दल चुनाव की मशीन बन गए हैं। वे सत्ता और पत्ता के दीवाने हैं। यदि डॉ लोहिया का साहित्य व्यापक पैमाने पर पढ़ा जाए तो आशा बंधेगी कि शायद आदर्शवादी नौजवानों की कोई ऐसी लहर उठ जाए, जो इस भारत को नए भारत में और इस दुनिया को नई दुनिया में बदल दे। लोहिया को गए अभी सिर्फ ४३ साल ही हुए हैं। उनका शरीर गया है, विचार नहीं, विचार अमर हैं। विचारों को परवान चढ़ने में कई बार सदियों का समय लगता है। अभी तो सिर्फ पहली सदी बीती है। हम अपना धैर्य क्यों खोएं? क्या मालूम आने वाली सदी लोहिया की सदी हो?

लेखक प्रसिद्ध राजनीतिक चिंतक हैं।

बिहार प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ – दिसम्बर 2009

सम्मेलन का इतिहास

दिनांक 20 दिसम्बर 2009 को कार्यकारिणी की बैठक एवं आरा शाखा के आतिथ्य में पटना प्रमंडल का प्रमंडलीय अधिवेशन का आयोजित की गई।

सम्मेलन को अपनी सेवा देने वाले प्रादेशिक अध्यक्षों की सूची–

1. श्री वंशीधर ढंढ़ानिया, भागलपुर 2. श्री राधाकृष्ण ज़ालान, पटनासिटी 3. श्री बनारसी लाल झुनझुनवाला, भागलपुर 4. श्री बनारसी प्रसाद, कोटरीवाल भागलपुर 5. श्री भगवती प्रसाद अग्रवाल, धनसार (धनबाद) 6. श्री खेमचन्द चौधरी, पटना 7. श्री परमानन्द केजड़ीवाल, मुजफ्फरपुर 8. श्री फतहलाल बरड़िया, नरकटियागंज 9. श्री राम कुमार झुनझुनवाला, बेतिया 10. श्री गौरी शंकर डालमिया, जसीडीह (देवघर) 11. श्री गौरी शंकर डालमियाँ, जसीडीह (देवघर) 12. श्री हरिराम गुटगुटिया, पटना 13. श्री मोतीलाल सुरेका, लहेरियासराय (दरभंगा) 14. श्री सीताराम रूँगटा, चाईबासा 15. श्री रामगोपाल अग्रवाल, धनबाद 16. श्री रामपाल अग्रवाल नूतन, पटना 17. श्री बद्री प्रसाद गुप्ता, पटना 18. श्री ताराचन्द दारूका, दुमका 19. श्री रामदयाल मस्करा, बेगूसराय 20. श्री नारायण प्र0 अग्रवाल, मोतीपुर (मुजफ्फरपुर) 21. श्री जगदीश प्रसाद मोहनका, पटना 22. श्री नन्दलाल रूँगटा, चाईबासा 23. श्री डा0 रमेश कुमार केजड़ीवाल, मुजफ्फरपुर 24. श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, पटना 25. श्री नथमल टिबड़ेवाल, मुजफ्फरपुर 26. श्री कमल नोपानी, पटना।

सन् १९३५ के दिसम्बर माह में सम्मेलन का जन्म हुआ था। उस समय उसके सभापति राय बहादुर रामदेवजी चोखानी थे और सम्मेलन का सारा कार्यभार सम्मेलन प्राण ईश्वरदासजी जालान पर था। स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व सम्मेलन ने १९४१ तक सामाजिक सुधारों के विषय में अपनी आवाज नहीं उठायी थी पर इसकी निम्न उपलब्धियाँ बहुत ही महत्वपूर्ण रहीं।

प्रांतीयता का जो विष सारे देश में फैल रहा था उसका अंत हुआ। सम्मेलन और देश के निवासी चाहे वे किसी भी प्रांत के रहने वाले हों, किसी भी प्रांत में व्यापार–व्यवसाय करने और प्रशासनिक तथा अन्य नौकरियाँ करने के लिए स्वतंत्र हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो मारवाड़ी समाज, जो सारे देश में फैला हुआ है, को विपत्ती उठानी पड़ती। इसलिए सम्मेलन का जन्म इस अर्थ में पूर्णत सार्थक हुआ। सम्मेलन का प्रांतीय स्वरूप १९४० में अस्तित्व में आया स्थापना काल के लगभग ७०वर्ष बीत चुके हैं और इस दौरान २६ प्रांतीय अध्यक्षों ने सम्मेलन में अपनी सेवाएँ अर्पित कर सम्मेलन को ऊँचाई तक पहुचाया है।

सम्मेलन ने समाज में शिक्षा प्रचार पर बहुत अधिक ध्यान दिया। जगह–जगह उसने शिक्षा कोषों की स्थापना की।

आज समाज अन्य समाजों से किसी भी तरह पीछे नहीं है। आज देश के हर क्षेत्र में ऊँचे ऊँचे स्थानों पर हमारे युवक और युवतियाँ नयी प्रतिभा का निर्माण कर रहे हैं। यह सम्मेलन की दूसरी महान उपलब्धि है।

समाज के गिरते हुए स्वास्थ्य को देखकर सम्मेलन ने जगह–जगह व्यायामशालाएँ खोली और खुलवायी तथा स्वास्थ्य की दिशा में हर प्रकार से अग्रसर होने के लिए कदम उठाए। हमें यह देखकर खुशी होती है कि इसका समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा और स्वास्थ्य की दृष्टि से आज मारवाड़ी समाज के लोग पिछड़े हुए नहीं हैं।

सम्मेलन ने इस बात पर भी जोर दिया कि सारे युवक और युवतियाँ अपनी योग्यता और प्रतिभा से पूर्ण सम्पन्न होकर, प्रशासनिक सेवाओं में ऊँचे से ऊँचे पदों पर पहुँचे और यश अर्जन करें। आज समाज में सेकड़ों की संख्या में आई.ए.एस., आई.पी.एस. आदि हैं और बहुत ऊँचे–ऊँचे पदों पर काम कर रहे हैं। इस प्रकार से इस काम में सम्मेलन ने बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है।

सन् १९४७ में सम्मेलन ने सामाजिक सुधार के मामले में बहुत आगे कदम उठाये और पर्दा प्रथा के विरूद्ध आंदोलन किये, प्रस्ताव पारित किये, प्रदर्शन किये, सत्याग्रह भी किये। उनके फलस्वरूप आज पर्दा प्रथा मारवाड़ी समाज में लगभग नहीं के बराबर है रौर अब हमारी बहनें जगह–जगह वकील, डॉक्टर और प्राचार्या आदि के पद पर पहुँच रही हैं।

सम्मेलन की यह भी उपलब्धि गौण नहीं है कि आज समाज में विधवाओं का पून:विवाह, जिसका नाम हमने आदर्श विवाह रखा है, का खूब प्रचार हो रहा है। सभी जगह उसकी प्रशंसा हो रही है। साथ ही समाज में परित्यक्ताओं के लिए हर प्रकार से दूसरे विवाह का प्रयास किया जाता है।

सम्मेलन ने समरसता के सिद्धांत पर बराबर जोर दिया है। जो भाई जिस प्रांत में रहते हैं। वहाँ के लोगों के साथ मिलकर काम करें और अपने को उसी प्रांत का माने।◆

दहेज के बल पर ससुराल में इज्जत न पायें

– डॉ. नीना अग्रवाल

पहले के मारवाड़ी समाज में नारियों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी। उन्हें परदे में, बंधन में रखा जाता था। विधवाओं को समाज से अलग जीना पड़ता था। शिक्षा के मामले में भी नारी पिछड़ी हुई थी। घर की औरतों पर घर की ही बड़ी औरतों का राज होता था। कारण था शिक्षा का अभाव। हमारी पूर्वज तो अनपढ़ थी या अर्द्धशिक्षित थी, जिनके लिए समाज घर होता था, घर की चारदीवारी सारा संसार होती थी। रीति रिवाज में जकड़ी–परम्परा से बंधी वे एक ही लकीर को पकड़कर चलती थी। पर आज की नारियाँ समाज को पूरी तरह बदल चुकी हैं। आज मारवाड़ी समाज की नारियाँ घर के परदों में नहीं रहतीं हैं, वह मंच पर खड़े होकर भाषण भी देना जानती हैं। कारण है आज की हर माँ का शिक्षित होना, सास का शिक्षित होना। वे जानतीं है कि बेटी, बहुओं का सारा संसार घर में नहीं वरन् बाहर भी है। आज हर क्षेत्र में लड़कियाँ ही आगे हैं। हर लड़की जब पैदा होती है, तो माँ ही उसकी पहली शिक्षक होती है। आज हमें हमारे माता–पिता ने शिक्षित किया, समाज ने हमें अच्छे बुरे का ज्ञान दिया, शिक्षकों तथा गुरूओं की संगत से हमें दुनिया की जानकारी मिली। इस सबका हमारे ऊपर एक कर्ज है और इस कर्ज को उतारने के लिए, हर लड़की जो आगे चलकर एक माँ बनती है, उसका फर्ज होता है कि वो अपनी संतान को भारत का ऐसा नागरिक बनाये जो देश के लिए कुछ करे, लोगों को उसकी अच्छाई याद रहे, न कि वो देश पर बोझ बने। आज ओड़िसा में नारियों की स्थिति अपेक्षाकृत पहले से बहुत अच्छी है। हर घर की बहु बेटी हर क्षेत्र में नाम कमा रही है। महिलाओं की समीति बन चुकी है। समीति की तरफ से हर नारी को देश की सभ्यता, संस्कृति से जोड़ना सिखाया जाता है साथ ही हर तरह की सुरक्षा भी प्रदान की जाती है।

विगत वर्षों से ओड़िशा समाज के बड़े बुजुर्गों ने विधवा विवाह की परम्परा को आगे बढ़ाया है। आज यहाँ के लोग अपनी विधवा बहू को अपशकुनी कहकर घर से निकालते नहीं वरन् बेटी बनाकर ससुराल से विदा करते हैं।

अगर घर की बहु शिक्षित है तो सास–ससुर उसका साथ देते हैं। समाज में उसका उत्साह बढ़ाते हैं। समाज में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर महिलाओं में सभी जगह अपना आदरणीय स्थान बनाया है।

ओड़िशा में राजनीति में भी नारियों ने अपना योगदान दिया है। मारवाड़ी समाज की महिलाओं ने नगरपालिका के चुनाव में हिस्सा लिया तथा जीत भी हासिल की है। इन दिनो सारे प्रदेश में शादियों में लाखों खर्च किये जाते हैं। इन सबमें महिलाओं का हाथ होता है। बेटी अपना दहेज स्वयं तैयार करती है। दहेज के बल पर अपने ससुराल में इज्जत पाना चाहती है। आज हम नारियों को एकजुट होकर इन सब कुरीतियों को दूर करना होगा। फिजुलखर्च को रोककर पैसों को अच्छे कामों में लगाना चाहिए। आज भी मारवाड़ी समाज की गरीब लड़कियाँ पैसों के अभाव में अच्छी शिक्षा से वंचित रह जाती हैं। उनके सपने, अरमान अभाव घुट–घुट कर मर जाते हैं। आज हम चाहेंगें कि मारवाड़ी समाज अपनी फिजूलखर्ची के रूपयों को इनकी शिक्षा में लगाएँ ताकि हमारे मारवाड़ी समाज को अच्छी शिक्षित माँ मिले जो कि आने वाले भविष्य को उजागर कर सके।◆

कुलदेवी प्राचीन संस्कृति की जीवन्त प्रतीक

राष्ट्रीय कुलदेवी शोध संगोष्ठी का शुभारंभ

सीकर, ६ मार्च। श्री कल्याण राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय सीकर में शनिवार को राष्ट्रीय कुलदेवी शोध संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात उद्योगपति व समाज सेवी बैजनाथ शोभासरिया ने की। उन्होंने श्रीराम महायज्ञ समिति रैवासा की ओर से सभी शोध पत्र वाचकों का शॉल ओढाकर अभिनन्दन किया। मुख्य अतिथि अग्रपीठा–धीश्वर स्वामी राघवाचार्य वेदांती ने कहा कि कुलदेवी की मान्यता भारत की प्राचीन संस्कृति का जीवन्त प्रतीक है। सारस्वत अतिथि श्री कृष्ण सत्संग कन्या महाविद्यालय के निदेशक डॉ. गोरधन सिंह शेखावत ने कुलदेवियों की मान्यता पर ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डालते हुए जमवाया माता की महिमा व इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला। साहित्यकार डॉ. महावीरमल लोढा ने अभिलेखों के संदर्भ मे कुलदेवियों की महिमा व इतिहास का विवेचन किया। इतिहासकार रतन लाल मिश्र ने जीणमाता, शांकभरी माता व दधिमथी माता के विषय में विस्तृत विवेचन किया। इतिहासकार रामनारायण सोनी ने कुलदेवियों के शक्तिस्थलों का विवरण प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संस्कृत मनीषी डॉ. देवकृष्ण सारस्वत ने की। प्रो. मोहन लाल शर्मा ने कुलदेवी की मान्यता के शास्त्रीय पक्ष को उजागर किया। राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय एवं संस्कृत विद्यालय के प्राचार्य डॉ.किशन लाल उपाध्याय ने समकालीन संदर्भ में कुल देवियों की मान्यता के महत्व का वर्णन किया। राजकीय शास्त्री महाविद्यालय सालासर के प्राचार्य भंवर लाल शर्मा ने हिंगलाजमाता के स्वरूप व महिमा के विषय में पत्र वाचन किया। इससे पूर्व संस्था के प्राचार्य डॉ. रामकुमार दाधीच ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता श्रीमती शारदा जांगिड़ ने किया। छात्रों ने वेदपाठ कर मंगलाचरण किया। राजस्थान संस्कृतक अकादमी जयपुर तथा श्री कल्याण राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस संगोष्ठी का समापन समारोह रविवार को दोपहर १२ बजे उद्योग मंत्री राजेन्द्र पारीक के मुख्य आतिथ्य में हुआ। अध्यक्षता संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महामंत्री पं. मोती लाल जोशी ने की।◆

तंबाखु–गुटखा, मदिरा–मांस

– शंकरलाल देवीदान

बंधुवर नशा कोई भी हो, सब नाश के ही कारण हैं,
बड़े–बड़े महल और राज, धराशाई हो गये, इसके उदाहरण हैं।
जरदा, गुटखा, बीड़ी सिगरेट–दारू और शराब,
आज ही छोडो, जहर ये यारों, शरीर कर रहा खराब।
गुटखा और चूना खैनी का स्वाद असल तब आयेगा,
जीभ जलेगी, गाल गलेगा, जबड़ा जड़ से जायेगा।
होगा कैंसर, मुख का रोग भयंकर, कैसे तुम बच पाओगे,
अनाथ छोड़कर बीवी–बच्चे, यमपूर में भी पछताओगे।
दूर करो जो अक्ल के आगे मूर्खता का परदा है,
आज ही छोडो, जहर ये यारों, गुटखा, शराब, जर्दा है।
सूंघा खाया या कश मारा, जहर बड़ा ये भारी है,
दिल का दौरा, तनका लकवा, टिकिट कटन की बारी है।
अफीम बेचारी पिछे हट गई, गांजा, भांग रह गया थोड़ा,
बेमौत मरने वालों को, नंबर वन पहुंचा रहा है गुटखा घोड़ा।
धन की हानि, तनकी हानि, मन आये बेईमानी धंधा,
मन मानी की ठांनी जिसने, पड़ा गले उसके फंदा।
धुआं उगले रोज विषेला, कश सिगरेट का खींचा है,
अपने बच्चों की छाती को, तुमने ही जहर से सींचा है,
खांसी, टी.बी और दमा के, नन्हे बच्चे शिकार हैं,
हाँ–धुम्रमपान की लत तुम्हारी, इसकी जिम्मेदार है।
नरक–निवास है ये, जीते जी, मौत की ये सीढी है,
आज ही छोडो, जहर ये यारों, शराब, गुटखा, बीड़ी है।
सही मानव बनना है तो नकली नशे को दूर करो,
पी–नशा समाज–कार्य व धैर्य का, आत्मबल भरपूर भरो।
जीओ सदा स्वावलंबी बनकर,मद का सदा तिरस्कार करो,
जो नशा तुमको पीजाए, तुम उसका बहिष्कार करो।
संयमी जीवन जगने से सुखी होगा परिसर पूरा घरबार,
जिओ स्वाभिमान से कर सर ऊंचा–मानव तन नही हरबार।
रहे सुरक्षित सारे मानव इन व्यसन रूपी हत्यारों से,
गूंजे स्वर अब नशा विरोधी, हर घर से गलियारों से।

– बस स्टैंड रोड, जालना. (महाराष्ट्र)
अ.भा.अग्रवाल स. राष्ट्रीय कार्य समिती सदस्य दिल्ली.
फोन – 02482/230508/230752

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe Business Economics

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)

Name: Mr./Ms. ______

Address ______

______ City/District ______

State ______ Country ______ Pin Code: ☐☐☐☐☐☐

E-mail ______ Mobile ______ Landline ______ (std code)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ______ dated ______ for Rs. ______ drawn on ______

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature ______ date ______

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, Business Economics, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact **Kolkata :** Ms. Sumita Agarwal 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh 93200 73700
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari 044-4217 1320, 93416 54257 • **New Delhi :** Lala P. Yadav 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe 94360 05889

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : धनपत गोलछा
कार्यालय का पता :
इन्द्र इलेक्ट्रीक कम्पनी
३२, इजरा स्ट्रीट, रूम न.–१६३,एक तल्ला
कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.–०९८३००२२५१५

नाम : विजय कुमार जैन
कार्यालय का पता :
माकुम मोटर्स
तुलसी राम रोड
तिनसुकिया, आसाम
मोबाईल नं.–०९४३५०३५७७७

नाम : जय प्रकाश मुँधड़ा
कार्यालय का पता :
विजय इन्डस्ट्रीज
उरोपियन क्वार्टर रोड
पो० : चाईबासा–८३३२०१
मोबाईल नं.–०९४३१११०१९१

नाम : दिलीप कुमार अग्रवाल
कार्यालय का पता :
मार्फत कुमार एक्सो वियर जैन मार्केट
सदर बाजार
चाईबासा–८३३२०१
मोबाईल नं.–०९४३११६१९५१

नाम : नारायण प्रसाद अग्रवाल (मारूका)
कार्यालय का पता :
मार्फत महादेव ट्रेडिंग कम्पनी
१५८, जमुना लाल बजाज स्ट्रीट
तीसरा तल्ला, कोलकाता–७००००७
मो.–०९८३१०८८५८२, ०९२३१६६९१४३

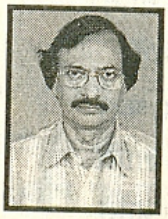

नाम : श्री राम सोनी
कार्यालय का पता :
डिवाइन नर्सिंग होम प्रा.लि.
११/ए, अविनाश चन्द्र बनर्जी लेन
कोलकाता–७०००१०
मोबाईल नं.–०९८३१०१२३३५

नाम : नवीन चौधरी
कार्यालय का पता :
संजय स्टील कॉरपोरेशन
५वी क्लाइव घाट स्ट्रीट
चौथा तल्ला, कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.–९८३१००२०९०

नाम : रजनीश गोयनका
कार्यालय का पता :
टोबू साईकिल एंड ट्वायस प्रा.लि.
एम–१९०, ग्रेटर कैलाश–प
नई दिल्ली–११००४८
मो.–९८१०००९१०१/९८१०००९१००

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री महेन्द्र कुमार डोकवाल
कार्यालय का पता :
डी नं : ४ – २ – १९८/ २
बालाजी कम्पाउण्ड सिनेमा रोड
आदिलाबाद, आंध्रप्रदेश

नाम : श्री ओमप्रकाश बजाज
कार्यालय का पता :
मेसर्स – राजेश कुमार एण्ड कंपनी
गोडाउन रोड, बिसाइड : साई बालाजी
रेसीडेन्सी लेन निजामाबाद, आंध्र प्रदेश–१
मोबाईल नं – ०९८४९५६१६२०

नया वर्ष

- संतोष बोंदिया

गया पुराना वर्ष आ गया
नया रूप लिये नव वर्ष
विश्व जगत में जन जन को
मंगलमय हो यह शुभ नव वर्ष
सोते सोते बीते बहुत साल
जला न सके हम मन का दीप
घिसी पिटी बातों में हम उलझते
देख न सके नयी रोशनी नयी जीत
घृणा से घृणा हो जाय हमको
ले अतीत से अगर हम प्रेरणा
देखें अब हम भविष्य के सपने
पूर्ण करें हम सब सपने अपने
क्षमा दया करुणा की गंगा
बहती रहे कल कल कल कल
शंति शांति सब ओर हो शांति
हो सुमधुर क्रांति, न रहे भ्रांति
सोचें हम कैसे यह कर जाएं
घर घर में मधुरस बरसा जाएं
नये वर्ष में प्यार के दीप जला
नयी दुनिया फिर यहाँ बसा जाएं

गांव की झलक.....

- खुशीराम अग्रवाल, झारखंड

चिड़िया, कभी पंख में भर कर,
थोड़ी हवा गाँव को लाना।
चिड़िया, कभी चोंच में भरकर,
थोड़ा जल पोखर का लाना।
पंजों में अटका कर अपने,
थोड़ी सी मिट्टी भी लाना।
खेतों की थोड़ी हरियाली,
अपनी आंखों में भर कर लाना।
कुछ शैतानी अपने तन में,
बच्चों की भी तुम भर लाना।
झोली में भर कर उनकी बोली,
खट्टी मीठी तुम ले आना।
हमें शहर में प्यारी चिड़िया,
ऐसे थोड़ा गाँव दिखाना।
पुस्तक में ही जिसे पढ़ा है
उसकी थोड़ी झलक दिखाना।

चूं-चूं रहते पानी पी लो.....

एक घुड़सवार दूर देश की यात्रा पर जा रहा था। उसका घोड़ा प्यास से तड़प रहा था। दूर एक रहट चलती दिखाई दी। घुड़सवार वहां गया। रहट के पास जाकर घोड़ा चौंक कर पीछे हटा। घुड़सवार बार-बार घोड़े को वहां तक ले जाता और घोड़ा चौंक कर पीछे हट जाता। घुड़सवार ने रहट वाले से कहा, भाई! थोड़ी देर के लिए अपनी रहट की चूं-चूं बंद कर दो तो मेरा घोड़ा अपनी प्यास बुझा ले। रहट वाला हंसा बोला, अरे अक्लमंद चूं-चूं बंद हो जायेगी तो उसके साथ पानी भी तो बंद हो जायेगा, पिलाओगे फिर क्या इस चूं-चूं में ही पिला सको तो पिला लो।◆

नागपुरी लोकगीत में प्रकृति चित्रण

– संजय कुमार षाड़ंगी

नागपुरी झारखण्ड क्षेत्र की प्राचीन भाषा है। झारखण्ड में प्राचीनकाल में यह राजकाज की भाषा थी और वर्तमान में भी चुनिंदा राज परिवारों के वंशजों में इस भाषा का प्रचलन चला आ रहा है। न केवल इसे सदान वर्ग बल्कि बहुतायत संख्या में आदिवासी भी बोलते हैं, इसलिए यह सदान वर्ग की मातृभाषा तथा आदिवासियों की सम्पर्क भाषा तथा कुछ की मातृभाषा है। यही कारण है कि अनेक उराँव, खड़िया मुण्डा लोगों के लोक गीत में नागपुरी शब्द मिलते हैं। इसकी उत्पत्ति मूलत: भारोपीय परिवार की पूर्वी शाखा के मागधी अपभ्रंश से हुई है। इस भाषा के मौलिक इतिहास के बारे में जानने के लिए यह आवश्यक होगा कि यहाँ के इतिहास का अवलोकन किया जाए। झारखण्ड में राजतंत्र की शुरुआत ६४ ई. में हुई थी। उस समय राज्य का नेतृत्व मदरा मुण्डा के हाथ था तथा गढ़ था सुतियाम्बे। नागपुरी भाषा के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, जब उस समय से उसका स्वतंत्र आविर्भाव हुआ। उस समय राजकाज की यही भाषा थी।

झारखण्ड क्षेत्र जिस प्रकार वन, पर्वत, पहाड़, झरनों से घिरा हुआ है, वैसे ही यहाँ पर कवि, गीतकारों की भी कमी नहीं है। यहाँ शिष्टसाहित्य से पहले लोक साहित्य की गूंज गाँव–गाँव में सुनी जा रही थी। सर्वेक्षण के अभाव में कुछ विस्मृत हो गये, लेकिन अभी जो भी हैं, वे यहाँ की माटी की महक को दर्शाते हैं। झारखण्ड क्षेत्र में गाये जाने वाले नागपुरी लोकगीत हमारे परिवेश की अकुलाहट, छटपटाहट, आक्रोश, प्रकृति वर्णन की ही मुख्य अभिव्यक्ति हैं। लोकगीतकारों ने यहाँ के वन्य जीव, पहाड़, पर्वत, जंगल, झाड़ आदि को साक्षी मानकर लोकगीतों की रचना की और आज वे विस्मृत हो गये। कुछ लोकगीत तो यहाँ के शोधकर्त्ताओं को प्रयास से मिले, परंतु अभी भी हजारों ऐसे गितकारों ने प्रकृति वर्णन में अपनी रुचि दिखायी, तो कुछ ने भगवत भजन की ओर। जो प्रकृति चित्रण से सम्बन्धित लोकगीत मिले हैं, उनकी किसी भी स्थिति में आज के गीतों से तुलना नहीं की जा सकती। ये इतने मधुर हैं कि सुनने पर मुग्ध कर देते हैं। लोक गीतकार बंधनमुक्त होते हैं। उनके गीत दो पंक्तियों में पूरे हो सकते हैं तथा बीस पंक्तियां भी लग सकती हैं। इसमें न तो विषय विच्छेद होता है और न अलंकार।

छोटानागपुर के लोगों की सामान्य आजीविका खेती है, जो कि वर्षा पर निर्भर करती है। इस वर्ष वर्षा अच्छी होगी, इसी उम्मीद से लोक गीतकार ने यह गीत रच डाला।

एसो कर बरसदा बड़े जोर, निर्झर मोट सोर,
एसों के बरसा बड़े जोर।
रोपली हम रोपा धान, बदरी गरजे आसमान
बन में नाचथंय मोर
एसो के बरसा बड़े जोर
खेत चइढ़ किसान ढाड़, भरल नदी देखे बाढ़
अन्न धन ना होआ थोर। (अंगनई राग)

जब पश्चिम की ओर से बादल चढ़ता है, जब अधिक वर्षा होती है चारों ओर मेंढ़क की टर्र–टर्र की आवाज आती है, खेती–सड़क सभी से पानी भर जाते हैं।

कोन कोना बरिसला रिमी झिमी पानी रे
कोने कोना बदरी चढ़ाय हो भाई
पूरब से बरिसला रिमी झिमी पानी रे
पछिम से बदरी चढ़ाय हो
पानी बरसी गेल, कियारी भिंज गेल
आरी कियारी भरे हो भाई।

कभी–कभी प्रकृति भी धोखा दे देती है। चारों ओर घनघोर घटाएँ होने बावजूद वर्षा एक बूँद भी नहीं होती, जिससे किसान मायूस होकर आसमान की ओर ताकता है कि शायद उसके मन की मुराद पूरी हो जाए।

सावन भादो पानी नी बरसे,
नयना पोखरी दोनो भराय हो नयना पोखरी
हंसा हंसिनी दुइयों पहुंराय हो.....
बाबा मोर अन–धन कुठराय गे आयो
आयो मोर घर कइसे सम्मराय हो रे आयो मोर घर.....

इस तरह कहा जा सकता है कि नागपुरी लोकगीत भी किसी अन्य लोकगीतों से कम नहीं इसमें लोगों की भावना, पीड़ा, दुख, वर्ण, प्रकृति चित्रण सभी का अंश मिलता है।◆

Caring for Land and People...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exports
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

HEAD OFFICE :

8A, EXPRESS TOWER,
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751
Fax: 91-33-2281 5380
Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION :

MAIN ROAD,
BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441
Telefax: 91-6767-276161

क्या हो विवाह की आयु.....?

– रिखब चन्द जैन

परिचय : श्री रिखब चन्द जैन की पहचान भले ही वस्त्र उद्योग की एक शीर्ष कंपनी टी.टी लिमिटेड के अध्यक्ष की रहें हो, परन्तु वह एक अच्छे चिन्तक, समाज सेवी एवं एक शिक्षाविद भी हैं। उन्होंने आई.आई एम कलकत्ता से एम.बी.ए. भी कई दशक पूर्व किया था। मेधावी छात्र होने के कारण वह प्रोफेसर भी रहे हैं। – संपादक

विवाह की आयु क्या होनी चाहिए, इस का कोई एक निश्चित जवाब नहीं है। इसका निर्णय हम देश, काल, भाव, समय तथा क्षेत्र के अनुसार जिस परिवार जाति समुदाय में हैं, उस परम्परा की, रीति रिवाज के अनुसार तय होना चाहिए। वैसे प्रकृति ने मनुष्य के शरीर की रचना की है, उसमें स्त्री के लिए तो खास तौर से है क्योंकि वह रजस्वला होती है, पीरियड मासिक आने लगता है तब वह वयस्क होती है। उसके बाद उसकी सारी क्षमता प्रजनन के लिए विवाह के योग्य मानी जा सकती है। यही शास्त्रों में कहा गया है कि उसके बाद लड़की विवाह योग्य हो गई है। पुरुष में ऐसा कुछ नहीं है, लेकिन लड़की से लगभग तीन चार साल बड़ा वयस्क माना जाता है। यह जलवायु पर भी निर्भर करता है। गरम देशों में वयस्कता पहले होती है, ठंडे मुल्क में बाद में होती है।

लेकिन सामाजिक परिवेश पर भी बहुत कुछ निर्भर है। भारतवर्ष में लड़कियों के लिए १८ वर्ष की आयु ठीक है, लड़के के लिए २० से २५ वर्ष तक आयु ठीक है। यह आज समय की भी जरूरत है। विवाह योग्य आयु में ही शीदी होनी चाहिए। आज २७ साल की लड़की की आयु में भी शादी नहीं हुई। ४० साल के लड़के की भी शादी नहीं हुई। इसके कई कारण हैं।

पहला कारण टीवी के प्रसारण तथा सैक्स में खुलापन, सह शिक्षा आदि हैं। इससे मानसिक तथा शारिरिक तौर से लड़के लड़कियाँ कम आयु में वयस्क हो जाते हैं। आप पढ़ते सुनते होंगे कि यूरोप में, अमेरिका में १५ वर्ष में ही लड़कियाँ गर्भवती हो रही हैं। यह हमारे यहाँ बाल विवाह में होता था। हमारी मां की, दादी की शादी ९–१० वर्ष में हो गई थी।

हमारी पत्नी १५–१६ साल में आई। अब ऐसी संस्कृति परोसी जा रही है, जिसमें खुलापन है। इसमें जो बातें बच्चे १८–२० वर्ष में भी नहीं जानते थे वह अब शादी से दस साल पहले जान जाते हैं।

दूसरे जो मातृत्व की अवधि है शारीरिक क्षमता के अनुसार वह महिलाओं के लिए है। वह अधिकतम ४० वर्ष है। उसके बाद प्रसव समाप्त हो जाता है। पुरुषों के लिए भी २० से ४० वर्ष ठीक है। परन्तु इससे ज्यादा उम्र हो, तो कई और असन्तुलन विकृतियाँ हो जाती हैं। जैसे बच्चा जब तक वयस्क बनेगा तब तक माँ और बाप बूढ़े हो जाएंगे, यह समस्या आ जाती है। लड़का २५ साल का हो, शादी हो जाय तब तक मां बाप रहें तो यह बेहतर है। बच्चे की परवरिश भी ठीक नहीं हो पाती। बच्चा काम में जाए, शादी ब्याह हो जाय और मां बाप का संरक्षण मिलता रहे, यही ठीक है।

प्राय: तीन कारणों से शादी की उम्र आगे बढ़ती है–पहला तो बच्चे तैयार नहीं हैं, पढ़ रहे हैं। दूसरा आमदनी नहीं, पहले स्वावलम्बी हो जाय। तीसरा बड़ा भाई या बहन बैठी है, उसकी शादी पहले हो जाय। अब संयोग बनने में भी कई दिक्कतें आने लग गई हैं। पहला पढ़ाई का कारण है। इसमें यदि ग्रेजुएशन हो गई और बाकी पढ़ाई शादी के बाद भी करे तो ठीक है, बल्कि बेहतर भी हो सकता है। डा.डी.ए कोठारी जी से मेरा निकट का सानिध्य था। उनका भी यही विचार था कि बच्चा विदेश पढ़ाई के लिए जाता है तो शादी कर के ही

जाय। पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च आदि शादी के बाद करे तो जो दूसरी तरह की विकृतियाँ पैदा होती हैं, वह रूकेंगी।

इसके अतिरिक्त युवा अवस्था के प्रारम्भिक काल में परस्पर एडजस्टमैंट जल्दी होता है। तीस वर्ष के बाद यदि शादी होती है तो आपसी सामंजस्य, स्वभाव का, सहनशीलता तथा रुचि का नहीं हो पाता। फिर उससे पारिवारिक अशान्ति और तलाक जन्म लेते हैं।

जैसे–जैसे उम्र बढ़ती है, आदमी के विचार पक जाते हैं और वह उनको छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। केवल शादी ही नहीं कोई भी काम उपयुक्त समय पर हो, तभी ठीक रहता है। हर काम समय पर ही होना चाहिए। पर समय कौन सा, इसके लिए जैसा मैंने पहले कहा, देश काल, भाव, परिस्थितियों के अनुसार तय हो। जैसे आज हमारी दादी की तरह ९ साल की बच्ची की शादी करनी हो तो आम लोग इसे अच्छा नहीं मानेंगे। गैर कानूनी तो है ही।

जनसंख्या नियंत्रण के हिसाब से कह रहे हैं कि शादी की उमर आगे बढ़ानी चाहिये। परन्तु आज जो खुलेपन का वातावरण आ गया है। सैक्स एजुकेशन की जो बात आ रही है तो शादी की उम्र बढ़ाने की बजाय घटानी चाहिए। बढ़ानी तो बिल्कुल नहीं चाहिए। केवल कानून की बात नहीं है, व्यावहारिक दृष्टि से भी शादी की उमर बढ़नी नहीं चाहिए।

शादी की देरी के कारण ही लिव इन रिलेशन का प्रचार बढ़ रहा है। यह सामाजिक विकृति है। आज महिला संगठन तो कह रहे हैं कि लिव इन रिलेशन वाली महिला को भी पत्नी के अधिकार दिए जाने चाहिए। लेकिन यह विवाह संस्था को ही नष्ट करना है। देरी से शादी से ही यह विकृतियां बढ़ रही हैं।

डा. सुनील जैन सर गंगा राम अस्पताल दिल्ली के सीनियर डाक्टर हैं। रोगी के इलाज तथा स्वास्थ्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं तथा उसके इलाज में होलीस्टक दृष्टिकोण रखते हैं।

उनसे जब विवाह की आयु की बात की तो उनका कहना था कि विवाह की आयु ऐसी होनी चाहिए कि जब पति–पत्नी मानसिक रूप से विवाह के लिए परिपक्व हों, शारीरिक रूप से विवाह के लिए तैयार हो।

जहां तक बायोलाजी का सवाल है, उनके जब पीरियड होने लगते हैं, उस के बाद भी वह १७–१८ की हो जाए तभी वह मातृत्व के बोझ के लिए तैयार हो पाएगी। दूसरे मानसिक दृष्टि से दोनों तैयार हैं। आजकल जो कामकाजी हैं और घर में रहती हैं दोनों की शादी के समय में थोड़ा अन्तर हो सकता है। क्योंकि दो लड़की पढ़ रही हैं तो उसका मन अभी शादी के लिए तैयार नहीं होगा। अत: दोनों की मानसिक स्थिति के अनुसार ही उनकी आयु तय होनी चाहिए।

सामाजिक सन्तुलन की बात सब से मुख्य है। विकृतियाँ कम से कम हों। थोड़ा बहुत आयु में अन्तर उनकी जाति सौष्ठव आदि पर निर्भर करता है। अत: आयु का निर्धारण उनकी शारीरिक क्षमता, अवस्था उनकी जाति क्षेत्र के अनुसार निर्णय होना चाहिए।

क्योंकि जो डाक्टर बनना चाहती है, वह बन जाय उसके बाद हीं शादी करे।

हमारे यहाँ संयुक्त परिवार प्रणाली का हरास हो रहा है। अत: अब तो शादी उसी समय करनी चाहिए जब आप अगली पीढ़ी को संसार में लाने को तैयार हों।

शादी के बाद यदि बहुत साल तक बच्चे नहीं चाहते और स्त्री की आयु जब अधिक हो जाती है उसकी प्रथम गर्भधारण में काम्पीलीकेशन की सम्भावनाएँ रहती हैं।

कानून की दृष्टि से आयु १८ और २१ है लेकिन २१ साल में लड़का परिवार का पालन पोषण करने में सक्षम होता है, या नहीं वह विचारणीय है। उसे परिवार के भरण पौषण का बोझ उठाने लायक होना चाहिए। पत्नी में भी इतनी परिपक्वता हो कि वह नए घर में जाकर नए परिवार के साथ समझौता कर सके। छोटी आयु वाली लड़की वह समझौता नहीं कर पाती। वास्तव में परिपक्वता की आयु नहीं होती, बल्कि यह एक प्रवृत्ति है।◆

आधुनिक बैंकिंग एवं बीमा व्यवस्था : मारवाड़ी समाज की देन

– रोहित मोदी

आजकल की बैंकिग एवं बीमा व्यवस्था मारवाड़ियों की सराफी–व्यवस्था है। यह महाजनी गणित के जटिल सूत्रों पर आधारित है। महाजनी गणित के विशेष जानकार व्यक्ति, जो ईमानदार के साथ–साथ साहसी भी थे, वही सराफी कारोबार किया करते थे। मारवाड़ी समाज के जिस परिवार में सराफी कारोबार पारंपरिक रूप से हुआ करता था उनके वंशज आज भी अपने उपनाम में सराफ लिखा करते हैं। सराफी कारोबार में बैंकिंग के साथ–साथ माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी ली जाती थी, यही आज की बीमा व्यवस्था है।

सराफी कारोबारी बंक भी कहलाते थे। बंक शब्द से ही बैंक एवं बैंकिंग बना। बंक को जब से रोमन अक्षर में पढ़ा एवं लिखा जाने लगा तब से ये बंका पुकारे एवं कहे जाने लगे। आज के समय में बंक के स्थान पर बंका शब्द प्रचलित हो चुका है। मारवाड़ियों की बंक–व्यवस्था के आधार पर ही अंग्रेजों ने आधुनिक बैंकिंग एवं बीमा व्यवस्था की नींव डाली।

मारवाड़ियों में सराफी कारोबार अंग्रेजों के आने के पहले तक गुप्त कारोबार था। इसके लिए गुप्त लिपि मुड़िया थी। मुड़िया लिपि कायस्थों की कैथी लिपि की तरह थी, जिसमें मात्रा नहीं लगायी जाती थी। सराफी कारोबारी के साथ–साथ सभी मारवाड़ी व्यापारी खाता–बही पत्र आदि मुड़िया लिपि में ही तैयार किया करते थे। अन्य लोग इसे न पढ़ पाते थे और न समझ सकते थे। मारवाड़ियों के गुप्त सराफी कारोबार का भेदन सर्वप्रथम जॉब चार्नाक नामक एक अंग्रेज व्यापारी ने किया। उसने इस गुप्त प्रणाली को सीखकर अन्य अंग्रेज व्यापारियों तक पहुँचा दिया। इसके बाद से ही बैंकिंग एवं बीमा की यह अघोषित अलिखित प्रणाली आरंभ हो गयी। इस ऐतिहासिक तथ्य को अदृश्य नहीं बनाया जा सकता।

एक प्रकार से मौजूदा बैंकिंग एवं बीमा की आधारशिला रखने का दायित्व जॉब चार्नाक ने सराफी कारोबारी सेठ चुहड़मल को दिया था, जो लाखों रूपये कम्पनी को उधार देते थे। इसलिए उनकी फार्म में अंग्रेज पदाधिकारियों का आना–जाना लगा रहता था। जॉब चार्नाक ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरों को पत्र लिखा था – हिन्दुस्तान में एक मारवाड़ी जाति ही ऐसी है जो अन्य सभी जातियों की अपेक्षा वाणिज्य–व्यवसाय में विशेष दक्ष और ईमानदार है। कम्पनी चाहे तो मारवाड़ी जाति से सहयोग प्राप्त कर अपने व्यापार का भारत में अधिकाधिक प्रसार कर सकती है। इस पत्र को लिखने से पहले जॉब चार्नाक सेठ चूहड़मल के सराफी गद्दी पर बैठकर मारवाड़ियों के गुप्त सराफी कारोबार का अध्ययन कर रहा था। सेठ चूहड़मल का मुनीम उन्हें भयाक्रांत होकर सराफी प्रणाली के गूढ़ रहस्यों के संबंध में बताता रहा था।

१७७७ के पूर्व, जब जॉब चार्नाक सराफी कारोबार का अध्ययन कर रहा था उस समय तक अंग्रेज व्यापारी यहाँ से प्राप्त रूपयों से सोना खरीद कर इंग्लैण्ड भेज दिया करते थे। उस समय की उनकी व्यापारिक प्रणाली बस इतनी ही थी। भारतीय व्यापारियों की तरह उनके पास महाजनी गणित नहीं था। सिर्फ सोना उपलब्ध कर लेना ही सफलता थी। यही उनमें धनी होने का प्रतीक था। अंग्रेज सहित सभी यूरोपियन गोरी जातियाँ सोने की खोज में इध र–उधर भटका करती थीं। सोने की खोज में वे अमेरिका में बसते चले गये। सोने की उनकी भूख ने ही उन्हें अमेरिका जैसा देश प्राप्त करा दिया। इधर अंग्रेज व्यापारी मारवाड़ी सराफी कारोबारियों को भयाक्रांत करके उनसे अढ़ैया, पवैया, सवैया, प्रतिशत ,दशमलव आदि महाजनी गणित सीख रहे थे। सिर्फ इसलिए कि शायद इस पद्धति से सोने की प्राप्ति अधिक मात्रा में की जा सके।

लेकिन अंग्रेजों की तीक्ष्ण बुद्धि ने इस विद्या को अपने हित के लिए आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था का रूप दे दिया।

१७७७ में आरंभ हुई व्यवसाय की यह सहयोगी प्रणाली १७८८ में अपने यौवन पर आ गयी। उस समय बंगाल में सराफे के कई फर्म विख्यात हो चुके थे, जिनमें गोपालदास मनोहरदास नामक मारवाड़ी फर्म सबसे अधिक विख्यात थी। आज की कोलकाता के मारवाड़ियों की बस्ती बड़ा बाजार में मनोहर दास कटरा उसका स्मरण

दिलाता है। सेठ मनोहर दास के वंशज व्यवसाय में ही नहीं, शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में भी विख्यात हुए। डॉ. भगवानदास जैसा दार्शनिक और श्रीप्रकाश जैसा राजनीतिज्ञ इसी वंश में हुए। मारवाड़ियों से सराफी कारोबार सीखकर अंग्रेजों ने अपनी जातीय उन्नति के लिए एक गुप्त नीति तैयार की। इसे लेखकों ने अंग्रेजों की दोहरे लाभ की नीति कहा। यहाँ से सस्ती दर पर कच्चा माल ले जाना, अपने उपनिवेशों के लिए सस्ता श्रम भारत से ले जाना तथा अपने तैयार माल को महंगे दर पर भारत में बेचना। इसे ही दोहरा मुनाफा कहते हैं। ब्रिटिश जनता का शानदार जीवन इसी नीति पर आधारित था।

सराफी प्रणाली मारवाड़ी व्यवसाय का मेरूदंड थी। इसी व्यवस्था की वजह से मारवाड़ी समाज तब के समय संगठित था। सराफी की आवश्यक शर्त थी – व्यक्तिगत गुण तथा ईमानदारी। इसके लिए चल या अचल सम्पत्ति के जमानत की आवश्यकता नहीं होती थी, जो आज की बैंकिंग प्रणाली की आवश्यक बात है। सराफे में व्यक्ति की ईमानदारी, कर्मठता और बाजार में उसका विश्वाास आदि जमानती चीजें थीं।

उस समय मारवाड़ी बच्चों को महाजनी शिक्षा पद्धति से शिक्षित किया जाता था। महाजनी शिक्षा पद्धति मारवाड़ियों की सिद्धोबसना शिक्षा पद्धति का संक्षिप्त रूप है। सिद्धोबसना को सिद्धो भी कहा जाता था। महाजनी से शिक्षित युवक जब वाणिज्य–व्यापार में संलग्न हो जाते थे तब उन्हें बड़े–बुजुर्ग सिद्धबसना के सूत्रों का पाठ पढाते रहते थे। यह महाजनी से भी जटिल एवं गणितीय सूत्रों पर आधारित थी। यह गणितीय सूत्र कहावतों, गीतों, पदों पर आधारित होती थी। सिद्धो के जानकार हवा के रुख के आधार पर आनेवाली फसल के मूल्य निर्धारण तक कर लिया करते थे। किस ओर व्यापार करने के लिए जाना है, यह सिद्धो के जानकार तय करते थे। मारवाड़ियों की सिद्धोबसना शिक्षा पद्धति आज के समय में लुप्त हो चुकी है।

शाहजहाँ के शासनकाल में मिर्जापुर और पटना व्यवसाय के प्रमुख केन्द्र थे। उस समय गंगा नदी परिवहन के लिए प्रधान भूमिका निभाती थी। मारवाड़ी सराफा व्यापारी माल सुरक्षित स्थान तक पहुँच जाने की गारन्टी देकर उनसे रुपये प्राप्त कर हुण्डी लिखा करते थे। इन्हीं सराफी फर्मों में से एक अनन्तराम शिव प्रसाद प्रसिद्ध हुआ। यह फर्म सराफा के साथ–साथ बीमा का भी कारोबार करता था। कम्पनी के अंग्रेज अधिकारी हमेशा उनसे सहयोग प्राप्त करते थे। मिर्जापुर के बाद सराफी प्रणाली कोलकाता में चल पड़ी। ताराचंद घनश्यामदास, दुलीचंद बग्धीमल, रामप्रसाद सूरजप्रसाद, दौलतराम किशनदास आदि कम्पनी सरकार के समय प्रसिद्ध मारवाड़ी सराफी फर्मे थी।

मारवाड़ी फर्मों से सराफी प्रणाली सीख लेने के बाद उनकी व्यापारिक तथा प्रशासनिक नीति में काफी बदलाव आ गये। उनका सब कुछ इसी निति पर आधारित होने लगा। प्रशासन पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेने के बाद उन्होंने यहाँ के कुटीर–उद्योगों को अमानवीय ढंग से क्रूरतापूर्वक नष्ट करना शुरु कर दिया। यह सब उनकी दोहरे मुनाफा नीति के अन्तर्गत किया गया। कमीशन एवं ब्याज आदि के जानकार हो जाने के बाद कम्पनी सरकार ने १८१३ में ब्रिटेन वासियों के लिए भारत में स्वतंत्र रूप से व्यापार करने के लिए छूट दे दी। उन्हें सरकार से इसके लिए परमिट लेना पड़ता था। उन्होंने व्यापार–कार्यालय भारत के प्रमुख शहरों में स्थापित किया। उनका एक ही मकसद था कि जिस प्रकार भी हो यहाँ का कच्चा माल खरीदकर इंग्लैण्ड भेजना और इंग्लैण्ड में बनी हुई वस्तुओं को यहाँ लाकर बेचना। इसके लिए उन्हें मध्यस्थों की जरूरत पड़ी। उन्होंने इसके लिए एक तरीका अपनाया। मसद्दीगीरी का, जिसे बेनियन कहा जाता था। इसके अनुसार माल अंग्रेज बेचते थे,पर खरीदने वाले व्यापारी को माल की आपूर्ति दूसरा ही व्यापारी करता था। जो आपूर्ति करता था उसे ही मुसद्दी कहते थे। इसके लिए उसे एक प्रतिशत कमीशन दिया जाता था। पर माल की सारी जिम्मेवारी उसी मुसद्दी पर रहती थी। उसी के नाम पर उधार भी जाता था क्योंकि माल की कीमत उन्हें ही देनी पड़ती थी।

कम्पनी सरकार ने रूपया का मूल्य कम कर दिया जिससे पौण्ड मजबूत हो गया। इसी वजह से इंग्लैण्ड के माल यहाँ सस्ते हो गए और भारतीय माल महंगे। भारतीय उत्पादन लागत बढ़ जाने से इंग्लैण्ड के बने सस्ते माल बाजारों में छा गये। इसके लिए अंग्रेजों द्वारा स्थापित बैंक उन्हें हर तरह से सहयोग करते थे। भारतीय सेठों की भी हालत कमजोर हो गई। छोटे–बड़े सभी, व्यापार के स्थान पर दलाली के कार्यों में लग गए। भारत की सभी आधारभूत संरचनाएँ चरमरा गयी और चारों ओर से पलायन शुरु हो गये। शेखावाटी क्षेत्र के वैश्य अपनी धरती को छोड़कर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कारोबार के लिए बसने लगे।

यह सब आधुनिक बैंकिग–व्यवस्था की वजह से हो रहा था। आज की बैंकिग–व्यवस्था मारवाड़ियों की सराफी–व्यवस्था का आधुनिक रूप है।◆

आखिर क्या है यह समाज सेवा

– बसंत मित्तल

आखिर समाज सेवा है क्या? उसका स्वरूप क्या है? यह आज तक कोई नहीं समझ पाया। हमने तो अपने धर्म ग्रंथों से यही सन्देश पाया है कि सहृदय, दयालू, परोपकारी और दानशील बनो–अब यह पता नहीं है कि इससे समाजसेवा होती है कि नहीं?

कई बड़े लोग अपने नाम के आगे समाज सेवी का परिचय लगवाते हैं। तो कुछ बुद्धिजीवी भी और कुछ नहीं तो अपने नाम के आगे सामाजिक कार्यकर्ता शब्द लगवाकर अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। कहा जाता है जो कुछ नहीं कर सकता वह राजनीति में चला जाता है और जो राजनीति नहीं कर सकता वह समाज सेवा में चला जाता है। सबसे बड़ी बात तो यह हो गई है कि अब समाज सेवा के लिए धन जुटाने हेतु प्रतिष्ठित खेलों के मैच और नाच–गाने के कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने लगे हैं–उनसे कितनी सेवा होती है कभी पता ही नहीं चलता।

वैसे किसी गरीब की आर्थिक सहायता करना, असहाय बीमार की सेवा सुश्रुषा करना और जिन्हें विद्या की आवश्यकता है पर वह प्राप्त करने में असमर्थ हैं उनका मार्ग प्रशस्त करना ऐसे कार्य हैं जो हर समर्थ व्यक्ति को करना चाहिए। इसे दान की श्रेणी में रखा जाता है और यह समर्थ व्यक्ति का दायित्व है कि वह करे। इतना ही नहीं, करने के बाद उसका प्रचार न करे क्योंकि यह अहंकार की श्रेणी में आ जायेगा और उस दान का महत्व समाप्त हो जायेगा। कहते भी हैं नेकी कर और दरिया में डाल। अगर हम अपनी बात को साफ ढंग से कहें तो उसका आशय यही है कि व्यक्ति की सेवा तो समझ में आती है पर समाज सेवा एक ऐसा शब्द है जो कतिपय उन कार्यों से जोड़ा जाता है, वह किये तो दूसरे के लियेजाते हैं पर उसमें कार्यकर्ता की अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने में सहायक होते हैं।

आजकल टीवी और अखबारों में समाज सेवियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के नाम आते रहते हैं। अगर उनकी कुल गणना की जाये तो शायद हमारे समाज को विश्व का सबसे ताकतवर समाज होना चाहिए पर ऐसा है नहीं, क्योंकि उनसे कोई व्यक्ति लाभान्वित नहीं होता जो समाज की एक भौतिक और वास्तविक इकाई होता है। समाज सेवा बिना पैसे के तो संभव नहीं है और समाज सेवा के नाम पर कई लोगों ने इसलिए अपनी दुकानें खोल रखीं हैं ताकि धनाढ्य वर्ग के लोगों की धार्मिक और दान की प्रवृत्ति का दोहन किया जा सके। कई लोग समाज सेवा को राजनीति की सीढ़ियां चढ़ने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आजकल समाज सेवा के नाम पर जो चल रहा है, उसे देखते हुए तो अब लोग अपने आपको समाज सेवक कहलाने में भी झिझकने लगे हैं। समाज सेवा एक फैशन हो गया है।

एक आदमी उस दिन बता रहा था कि सर्दी के दिनों में एक दिन वह एक जगह से गुजर रहा था, तो देखा एक कार से औरत आयी और उसने सड़क के किनारे सो रहे गरीब लोगों में कंबल बांटे और फुर्र से चली गयी। वहाँ कंबल ले रहे गरीब ने पूछा आप कौन हैं जो इतनी दया कर रहीं हैं? उसने हंसकर कहा–मैं कोई दया नहीं कर रही हूँ। ईश्वर ने जो दिया है उसे ही बाँट रही हूँ। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। यह सब भगवान की दी हुई माया है।

उस आदमी ने वहाँ खड़े होकर यह घटना देखी थी। उसका कहना था कि कंबल भी कोई हलके नहीं रहे होंगे। ऐसे अनेक लोग हैं जो सच में समाज सेवा करते हैं। पर प्रचार से दूर रहते हैं। कुछ धनी लोग दान करना चाहते हैं पर नाम नहीं देना चाहते, इसलिए वह बिचोलियों का इस्तेमाल करते हैं। जो समाजसेवा की आड़ में उनके पास पहुंच जाते हैं, और चूंकि उनका मन साफ होता है इसलिए कोई सवाल जवाब नहीं करते–पर इससे तथाकथित समाज सेवियों की बन आती है।

उस दिन अखबार में पढ़ा कि एक गरीब लड़की के इलाज के लिए पैसे देने की पेशकश लेकर एक आदमी उनके दफ्तर में पहुंच गया पर उसने शर्त रखी कि वह उसका नाम नहीं बताएँगे। उस अखबार ने भी उसकी बताई राशि तो छाप दी पर नाम नहीं लिखा। अब चूंकि वह एक प्रतिष्ठित अखबार है तो वह रकम वहाँ तक पहुंच जायेगी पर कोई तथाकथित समाज सेवी संस्था होती तो हो सकता है उसके लोग उसमें अपना भी जुगाड़ लगाते। मैंने पहले ही यह बात साफ कर दी थी कि व्यक्ति की सेवा तो समझ में आती है, समाज सेवा थोड़ा भ्रम पैदा करती है। व्यक्ति की अपनी जरूरतें होती हैं और उसको समाज से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता।◆

साक्षात्कार आचार्य महाप्रज्ञ से

– प्रकाश चंडालिया

अपने चिन्तन और विचारों से ऐसे ही करोड़ों लोगों को प्रभावित करने वाले श्री महात्मा यूं तो तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य हैं, लेकिन अपने चिन्तन के माध्यम से उन्होंने यह स्थापित कर दिया है कि वह केवल तेरापंथ संघ के आचार्य ही नहीं, भारत के महान दार्शनिकों में उनका नाम सुमार है। उम्र के आठ दशक पार करने के बाद भी अहिंसा की महान यात्रा लेकर पूरे भारत भ्रमण पर निकले आचार्य श्री ने महाप्रदीय देश के कई प्रान्तों का सफर कर लिया है। राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा जैसे प्रान्तों में उन्होंने अहिंसा यात्रा का परचम लहराया है और अब तक ७.५ हजार किलोमीटर से अधिक की यात्रा संपन्न कर चुके हैं। आचार्य महाप्रज्ञ की इस यात्रा में १०० करोड़ की आबादी वाले इस देश में

एक प्रतिशत ही कहें तो एक करोड़ से ज्यादा लोग इनके संपर्क में आए हैं। आचार्य श्री का प्रभाव अहिंसा यात्रा का कितना है यह इसी से समझा जा सकता है कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आठ बार गुरुदेव का दर्शन करने आ चुके हैं।

उनसे किए गये प्रश्नोत्तर :–

प्रश्न : गुरुवर, आप अहिंसा यात्रा पर निकले हुए हैं और अब तक आपने ७.५ हजार किलोमीटर की यात्रा कर ली है। अहिंसा यात्रा का चिंतन आपके दिमाग में कैसे आया और जो आपकी आंखों में एक सपना था अहिंसा यात्रा का उसे साकार करने में आप कहां तक बढ़ पाए।

उत्तर : भगवान महावीर के २६वें जन्मदिन को भारत सरकार ने अहिंसा वर्ष घोषित किया था। काफी समय बीत गया–कुछ भी नहीं हो रहा था, तब एक चिन्तन आया कि अहिंसा वर्ष की घोषणा सरकारी घोषणा तो है ही किन्तु हमारा भी कर्तव्य है कि कुछ करना चाहिए। एक निमित बना और अहिंसा यात्रा की भावना, कल्पना सामने आई। फिर उस पर चिन्तन किया, उद्देश्य बनाया कि जनता में अहिंसा की चेतना जागृत हो। सुजानगढ़ से सफर शुरू हुआ और पांच वर्ष पूरे हो गए, छठा वर्ष अभी चल रहा है। व्यापक जन संपर्क रहा और हमने केवल बात में ही हिंसा–अहिंसा की बात में ध्यान नहीं दिया वह तो चल ही रहा था, किन्तु अहिंसा के कारणों पर विचार किया, चिन्तन किया, अनुसंधान किया तो सामने जो कारण आये तो मान लिया एक साधन है कि अहिंसा ज्यादा हो।

प्रश्न : देश में बढ़ती हिंसा का मुख्य कारण क्या है?

उत्तर : जातिवाद और सम्प्रदायवाद हिंसा का कारण बन रहा है। अनैतिकता भी हिंसा का कारण है। आदमी में आवेश इतना बढ़ रहा है कि आज सहन करने की शक्ति कम हो गई है। साथ–साथ में गरीबी तो है ही, किन्तु रोटी का अभाव भी हिंसा का बड़ा कारण बन रहा है। भूखा आदमी हिंसा में बह जाता है। इन सब कारणों को सामने रख कर हमने काम शुरू किया कि हमारा एक लक्ष्य रहे स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ अर्थ व्यवस्था, इन तीनों के समन्वयन के बिना अहिंसा की बात आगे नहीं बढ़ सकती। इन सब के चिंतन के साथ हमने यात्रा शुरू की और संयोग की बात है कि सबसे पहले राजस्थान से गुजरात में हिंसा के वातावरण में ही हमें प्रवेश करना पड़ा।

प्रश्न : आप अंहिसा के विभिन्न प्रयोग करते रहे हैं। क्या यह संभव है कि हम अंहिसा का पूर्ण दौर देख सकेंगे क्या सभी धर्मों के एकीकरण की कल्पना की जा सकती है?

उत्तर : पूर्ण अहिंसा कभी संभव नहीं है। सभी धर्मों के एकीकरण की कल्पना करनी नहीं चाहिए। संभव भी नहीं है। हमें तो इतना ही करना चाहिए कि धार्मिक लोगों में सामंजस्य रहे, समन्वय की भावना रहे और धर्म के नाम पर लड़ाई झगड़ा न हो। इतना हो जाए तब इससे आगे जाना भी नहीं है। संभव भी नहीं है। पूर्ण अहिंसा की कल्पना ही डींग है। क्यों कि मनुष्यों के मस्तिष्क समान नहीं होते हैं। मस्तिष्क की रचनाएं भिन्न चिन्तन–मनन करती है। राष्ट्रीयता भी भिन्न–भिन्न होती है। इतना ही कर सकते हैं कि कोई भी राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर अपना बाजार और व्यावसायिक प्राधित्व स्थापित न करें इतना हो तो कार्य अच्छा है।

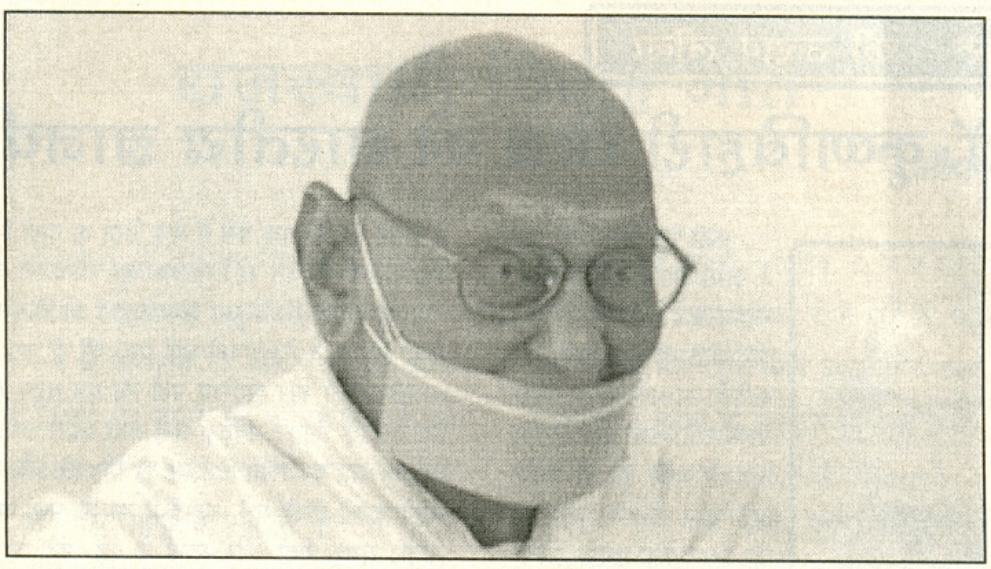

प्रश्न : आंतकवाद की मूल जड़ क्या है?

उत्तर : आतंकवाद की मूल वजह राजनीति और वे करततें हैं जो कुछ कारणों से कुछ लोगों के द्वारा होती हैं। आतंकवाद है, भिन्न वाद है, इसके पीछे अनेक कारण हैं—राजनीतिक कारण भी हैं, और कुछ राष्ट्रों पर अपना अधिकार व प्रभुत्व जमाने की भावना भी है। इन कारणों में एक मूल कारण ये लगता है कि भूखे आदमी को धनी आदमी जहां लगाना चाहें लगा सकते हैं। अतंकवाद में यही हो रहा है।

प्रश्न : धर्म के नाम पर जेहाद क्या आतंकवाद का ही एक हिस्सा है?

उत्तर : आतंकवाद एक जाल है। कोई भी अतंकवादी अपने पुत्र को आतंकवादी नहीं बनाता। जेहाद और आतंकवाद अलग—अलग और एक दूसरे के विपरीत बिन्दु हैं।

प्रश्न : भारत में हिंसा रुकने का नाम ही नहीं लेती। आरोप है कि पड़ोसी देश भारत में आतंकवाद को शह दे रहा है।

उत्तर : पहले ही कहा है कि राजनीति आतंकवाद का मुख्य कारक है।

प्रश्न : विभिन्न धर्मों के अनेक साधु—संत काफी वैभवशाली जीवन यापन करते हैं।

उत्तर : यह एक संवेदनशील विषय है, जिसके बारे में अध ूरी बात कहना नहीं चाहता और पूर्ण बात कह नहीं सकता।

प्रश्न : संथारा को गलत संदर्भ में परिभाषित किया जाता है।

उत्तर : यह भ्रांति है। आत्महत्या आवेश में की जाती है जबकि संथारा साधना या समाधिकरण का एक प्रयोग है। अधूरे ज्ञान के कारण लोग संथारा को आत्महत्या परिभाषित कर देते हैं।

प्रश्न : युनेस्को के शान्ति विश्वाविद्यालय के पदाधिकारी एवं संयुक्तराष्ट्र संघ के शान्ति मिशन के लोग आपसे मिलते रहे हैं। इस संबंध में अब तक क्या काम हुआ है?

उत्तर : चर्चाएं होती हैं। हिंसा के दमन के लिए वे लोग सामंजस्य स्थापित करना चाहते हैं, प्रयास जारी है।

प्रश्न : पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ आप पुस्तक लिख रहे हैं। कैसी होगी यह पुस्तक क्या विज्ञान और अध्यात्म में सामंजस्य संभव है?

उत्तर : पूर्व राष्ट्रपति के साथ पुस्तक से संबंधित चर्चाएं होती रही हैं। पुस्तक कैसी होगी इसका आंकलन तो पाठक ही करेंगे। विज्ञान और अध्यात्म का योग समाज व राष्ट्र को बेहतर स्थिति में ला सकता है।

प्रश्न : राष्ट्रकवि दिनकर ने आपकी तुलना स्वामी विवेकानन्द से की है जबकि कुछ लोग आप में गाँधी की छवि देखते हैं।

उत्तर : आचार्य तुलसी ने एक बार कहा था कि महाप्रज्ञ को महाप्रज्ञ ही रहने दो। मैं भी यही सोचता हूँ।

प्रश्न : आप अपने लक्ष्य में कितने सफल हुए हैं?

उत्तर : पहले पहल तो लक्ष्य नहीं जानता था, कितना बढ़ पाया उसको मापना कठिन है। हिमखण्ड का सिरा दिखाई देता है, सम्पूर्ण हिमखण्ड तो सागर में ही समाहित है।

प्रश्न : तेरापंथ का भविष्य.....?

उत्तर : आचार्य तुलसी के शब्दों में शुभ ही शुभ है।◆

कल्पतरु : की उत्सव लीला

डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र को भारतीय ज्ञानपीठ

श्रद्धा एक सामाजिक भाव है, इससे अपनी श्रद्धा के बदले में हम श्रद्धेय से अपने लिए कोई बात नहीं चाहते, श्रद्धा धारण करते हुए हम अपने को उस समाज में समझते है जिसके किसी अंश पर चाहे हम व्यष्टि रूप में उसके अंतर्गत न भी हों– जानबूझ कर उसने कोई प्रभाव डाला, श्रद्धा स्वयं ऐसे कर्मो के प्रतिकार में होती है जिनका शुभ प्रभाव अकेले हम पर नहीं, बल्कि सारे मनुष्य समाज पर पड़ सकता है, श्रद्धा एक ऐसी आनंदपूर्ण–कृतज्ञता है, जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधि के रूप में प्रकट करते हैं, यह काम उसने इतना भारी समझा कि उसका भार सारे मनुष्यों को बांट दिया, दो चार माननीय लोगों के ही सिर पर नहीं छोड़ रखा है। (आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध श्रद्धा भक्ति से)। इसी श्रद्धा भाव से कृष्ण बिहारी मिश्र ने कल्पत: की उत्सवलीला मनुष्य जाति में बांटने का सौभाग्य प्राप्त किया। मिश्र जी नहीं जानते कि यह पुस्तक कैसे लिखी गयी। आम बतकही में वह कहते हैं कि बस ठाकुर की कृपा है, उन्होंने ही लिखवा लिया। यह कि वह तो बस केवल लिपिक थे। उल्लेखनीय है कि साहित्य साधना में वर्षो से जुटे श्री मिश्र को भारतीय ज्ञानपीठ का वर्ष २००६ का मूर्तिदेवी पुरस्कार देने का फैसला किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें उनकी रचना कल्पतरु: की उत्सवलीला के लिए दिया गया है। एक दिन ठीक आज से लगभग ७७ साल पहले उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में स्थित बलिहार गांव में रहने वाले पंडित रामलगन मिश्र के दूसरे पौत्र का जन्म हुआ। यह बच्चा ठीक अपनी मां पर गया था। कहा जाता है कि मां जैसा होने वाला लड़का बड़ा भाग्यशाली होता है। पर मन में एक भय भी था। अपने इस दूसरे पौत्र की रक्षा के लिए एक बाबा ने पता नहीं क्या–क्या किया था। उन दिनों बड़ा आश्चर्य होता यह सुन कर कितना अंधविश्वास था उस समय पर यह भी महसूस होता है कि उन्हीं अंधविश्वाासों के सहारे लोग रोशनी की तलाश करते थे और उन्हें प्रकाश मिलता भी था, जिसके सहारे जीवन जीने की कला पूंजी के रूप में हुआ करती थी उनके पास। रामलगन जी के एक भक्त थे गांव में। अभाव में रहने वाले। पर भीतर से उतने ही मजबूत। एक जिंदादिल इंसान नाम भी उनका गजब का। दुखी मिसिर। वे तो लाटू थे। लाटू की ही तरह अपने ठाकुर रामलगन जी के परम भक्त और सेवक। अद्भुतांनद जी महाराज। अपने पिता के कहने पर पुत्र घनश्याम ने अपने पुत्र को एक पैसे में बेच दिया था दुखी मिसिर को, ताकि वह बालक जीवित रहे। बालक का नामकरण हुआ। नाम रखा गया कृष्ण बिहारी। बबुआ कृष्णबिहारी या किसुन बिहारी बचपन से ही बड़े शांत थे। अपनी माई (मां) की ही तरह। मां उन्हें सबसे अच्छी लगती थीं। इसलिए नहीं कि वह बहुत सुंदर थीं, बल्कि इसलिए कि उनकी संवेदना उन्हें बड़ी प्यारी लगती, क्या दिन थे वे, जब जेठ का लंबा दिन मां को निहारते और माघ, पूष की न कटने वाली लंबी रातें, रजाई में मां के साथ सटकर सोते कट जातीं। सुबह होती और रजाई में पड़े–पड़े जो पहली आवाज कानों तक पहुंचती, वह मां की ही होती। मां गाती– कछुक दिवस जननी धरू, कपिन्हु सहित अइहहिं रघुवीरा। सच तो यह है कि गांव उसमें समाता जा रहा था। घर–आंगन, अड़ोस–पड़ोस, दुआर–बथान, खेत–खलिहान, मठिया–बगइचा, परती–परांत, पैड़–पौधे, पर्व–त्योहार, दोस्त, गांव के पुराने लोग उसे इतने अपने लगते, मानो वह सुख का चरम भोग रहा हो।

जब डॉक्टर मिश्र की भार्या लीला पहली बार अपने घर (ससुराल) आयीं तो माता–पिता से प्राप्त उपहार के बक्से को बड़ी उत्सुकता से औरतों ने खोला, अच्छे–अच्छे उपहारों के साथ उस बक्से में पुस्तक मिली, उसे महिलाओं ने एक तरफ हटा दिया। अचानक उस पर युवा कृष्ण बिहारी मिश्र की नजर पड़ी। पुस्तक उसने उठा ली और उसके पन्ने पलटने लगे। किताबों के प्रति उनके प्रेम ने उन्हें इतनी बुद्धि तो दे ही दी थी जिससे समझ आये कि उनकी भार्या की ओर से मिलने वाला उपहार अद्भुत था। पुस्तक का नाम था–भारत में विवेकानंद। सच तो यह है कि यहीं से युवा कृष्ण बिहारी मिश्र के जीवन में ठाकुर रामकृष्ण देव का प्रवेश हुआ। कई साल पहले अपने अनुज तुल्य प्रमोद शाह के बाल हठ के चलते कृष्ण बिहारी जी ने एक बड़ा काम हाथ में लिया। वह काम पूरा हुआ और पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी। हिन्दी पत्रकारिता: राजस्थानी आयोजन की कृती भूमिका। इसके लोकार्पण समारोह में पंडित विद्यानिवास मिश्र आये थे। मंच पर भाषण में उन्होंने कहा था और बड़े ही विश्वास के साथ कहा था कि सब काम छोड़कर कृष्ण बिहारी जी को रामकृष्ण देव पर एक पुस्तक लिख देनी चाहिये। यही इस काम को प्रामाणिकता के साथ स्वरूप प्रदान कर सकते हैं। आज विवेकानंद की अपेक्षा रामकृष्ण की समाज को अधिक जरूरत है। पंडित विद्या निवास जी के इसी विश्वास के ब्याज से कल्पतरु: की उत्सवलीला रची गयी। एक ऐसी रचना, जिसकी तुलना मैगसेसे विजेता महाश्वेता देवी बांग्ला में रचित श्री श्री रामकृष्ण कथामृत से करती हैं।

प्रस्तुति: नवीन श्रीवास्तव प्रसंग: कल्पतरु: की उत्सवलीला के लिए कृष्णबिहारी मिश्र को मूर्ति देवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।◆

राजस्थानी विवाह गीत

– ओंकार पारीक

राजस्थानी लोकगीतों के अलावा विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों की अपनी एक विशिष्टता है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक के संस्कारों पर महिलाओं द्वारा गीतों की प्रस्तुति की जाती है। हमारे घर की महिलाओं का केवल व्यक्तिगत रूप से ही नहीं, बल्कि अड़ोस–पड़ोस की लड़कियों को लेकर सामूहिक रूप से गीतों के जरिए क्रियान्वयन सहयोग आवश्यक समझा जाता है। सामाजिक परंपरा में महिला पर पुरुषों के कार्य का विभाजन कर सहज बना दिया गया है। एक ओर पुरुष ही आए हुए मेहमानों का स्वागत करता है, पूजा–होम की व्यवस्था करता है। बारात जुलूस आदि की सजावट स्वागत का प्रबंध करता है, वहीं दूसरी ओर महिलाएं अपने स्वभाव सुलभ, कोमलता, सरलता और स्निग्धता का सर्वोत्तम उपयोग करते हुए आगंतुक मेहमानों का स्वागत करती हैं, सजावट और धूमधाम का वर्णन भी गीतों के माध्यम से करती हैं, तो हवन–पूजा आदि की व्याख्या भी। वर–वधू को उपदेश और आशीर्वाद भी देती है।

प्रत्येक अवसर पर स्त्रियों के लिए एक पृथक स्थान निर्धारित किया जाता है, जहां बैठकर वे आगत मेहमानों, परिजनों, सगे–समबंधियों के प्रति अपने मनोभाव बड़े ही सुंदर शब्दों और काव्यमयी भाषा में व्यक्त करती हैं, कुशल प्रश्न पुछती हैं, मनोरंजन के निमित्त प्रश्नोत्तर करती हैं और विदाई के वक्त प्रणाम तक करती हैं। क्या इतना काफी नहीं है। घर परिवार में आयोजित होने वाले पर्व–त्यौहार और समारोह में चार चांद लग जाते हैं। आज आधुनिकता और पाश्चात्य की ओर हमारी नई पीढी का प्रभाव होने के कारण भले ही इनका प्रयोग कम हो गया है, लेकिन इन अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों की प्रासंगिकता और उनका महत्व कम नहीं हुआ। अतीत में जब आज की तरह लड़के– लड़कियों द्वारा आपस में देखे जाने और उनकी स्वीकृति के बिना शादी–विवाह की परंपरा नहीं थी, तब केवल दोनों पक्षों के अभिभावकों की रजामन्दी ही महत्वपूर्ण मानी जाती थी। हमारी उन रूढ़ियों में ही वर के चुनाव के संबंध में महिलाओं द्वारा निम्नलिखित गीत विवाह के पूर्व गाया जाता था–

(1) ''आ बेल पाना फूलां छाई,
हंसके बाबाजी बाई ने गोद बैठाई
''कहो न चतर बाई, किसो वर हेरां''।
''कालो मत हरो कुल न लजासी,
गोरो मत हेरो निजर लग ज्यासी''
(2) ''इसो वर हेरो काशी को बासी,
काशी जी रो बासी बाई रै मन भासी''
आ बेल पाना फूलां छाई
हंस के काकोजी बाई नै गोद बैठाई।''

फूल और पत्तों से छाई कोमल लता के समान वह बाई(लड़की) सर्वप्रथम अपने पिता के पास आती है। हंसते हुए पिता उसे गोदी मैं बैठा लेते हैं और पूछते हैं, ''ए चतुर बाई, बतलाओ तुम्हारे लिए कैसा वर ढूंढे।'' लड़की उत्तर देती है– केवल रूप को देखकर ही काला–गोरा न ढूंढिएगा, क्योंकि छोटे रूप में दोनों में ही दोष निकल आते हैं, और न केवल लम्बा या ओछा, मोटा या पतला देखकर ढूंढियेगा, क्योंकि चुनाव का यह तरीका अपूर्ण और सदोष है, मेरे लिए तो काशी का बासी (विद्वान और शिक्षित) वर ढूंढियेगा, वही आपकी बाई को पसंद आयेगा। इसी प्रकार फिर बाई काकोजी और भाई के पास व अन्य परिजनों के पास जाती है और इसी प्रकार के प्रश्नोत्तर होते हैं। विवाह के दिन इस संबंध में एक गीत और गाया जाता है–

एक श्याम सुन्दर बनड़ी बादर आई,
करै छै बाबाजी स्यू बीनती
''देश देता बाबाजी परदेश दीज्यो,

म्हारी जोडी रो वर हेरज्यो।''
हँस खेलए बाबाजी री प्यारी,
हैरयो छै फूल गुलाब रो।

एक श्याम सुन्दर बनड़ी (विवाह योग्य कन्या) बाहर आई और अपने पिताजी से अनुरोध करती है– 'पिताजी मुझे भले ही देश(अपने ही प्रांत) में न देकर परदेश (दूसरे प्रांत में) ब्याह दीजियेगा, किन्तु दीजियेगा मेरी जोड़ी का वर देखकर ही, पिता जबाब देते हैं,

''ऐ बाबाजी की लाडली बेटी,
निश्चिन्त होकर हंस–खेल,
तेरे लिए गुलाब का फूल
(सुंदर और सर्वगुण संपन्न वर) ढूंढा है''।

इसी तरह वह काको जी और भाईजी के पास जाती है, जहां इसी प्रकार के प्रश्नोत्तर होते हैं। वर के चुनाव के संबंध में कन्या की जिज्ञासा का एक कदम और आगे बढा हुआ स्वरूप इस गीत में देखिए–

''दादाजी, बाई रो वर हेरो हो घर हेरो,
बिणजारी (व्यापारी) वर मत हेरो।
बिणजारे माया को लोभी,
सांझ पडयां वो लदज्यासी,
गोरी–गोरी टिबड़या ढल ज्यासी,
टाटी औले पोवै बाटी,
एक लड़ो गटका ज्यासी;
थारी बाई री चिंता कुण करसी।''
(2) **''हेरयो ए कंवरबाई,**
हेरयो ए चतरबाई,
हेरयो है फूल गुलाबां रो।
कड़ा कांकड़ा पहरण वालो,
मोहर रूपयां को परखणवाली
शाल दुसाला को ओढण वालो,
बाईजी री चिंता वो करसी।''

इस गीत में कन्या वर के सर्वगुण संपन्न होनें के साथ–साथ उसकी आर्थिक अवस्था के बारे में भी अपने परिजनों से प्रार्थना करती है। कन्या कहती है कि–''पिताजी, वर का चुनाव करते वक्त उसके घर के चुनाव का भी ख्याल रखिएगा। किसी बणजारे (घूमंतु व्यापारी) को वर मत चुनिएगा, क्योंकि वह धन का लोभी होता है। संध्या होते ही वह अपनी बालद (काफिला) के साथ कूच कर जाएगा और रात होते ही गोरी–गोरी टिबड़ियो (बालू के छोटे–छोटे टीले) को पार कर जाएगा। भूख लगने पर किसी टाटी (छप्पर) की ओड़ में बाटी पका लेगा और मेरी याद किए बिना अकेला ही खा जाएगा। मेरी चिंता कौन करेगा?''

इस पर पिता उत्तर देते हुए समझाता है,

''ए चतुर बाई, तेरे लिए ढूंढा हुआ वर गुलाब के फूल की तरह सुंदर और गुणवान तो है ही, साथ ही व्यापारी होने की वजह से तुम्हारी जो आशंका है, वह व्यर्थ है। वह खूब धनवान और संपन्न है, साथ ही रूपयों की परख करने वाला है, तेरे गुणों का पूरा सम्मान करेगा और तुम्हारी पूरी चिंता भी करेगा।''

यह निर्विवाद सत्य है कि यदि पुरुष वर्ग इन गीतों को ध्यान पूर्वक सुने और मनन करे तो शायद ही कोई पाषाण हृदय पिता होगा, जो अपनी कन्या की इस अप्रत्यक्ष विनय को ठुकरा कर उसके भावी जीवन का ख्याल न करे। कितनी चतुराई के साथ कन्या वर के चुनाव के संबंध में एक झीने आवरण की ओट में अपनी कोमल भावनाओं को पिता के सामने व्यक्त करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विवाह–शादी तथा अन्य पारंपरिक उत्सवों पर गाए जाने वाले लोकगीत न केवल हमारा मनोरंजन करते हैं, बल्कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर बहुत सी जानकारियां देने के साथ–साथ कई प्रकार की शंकाओं का निवारण भी करते हैं।

खेद का विषय है कि बहुतायत संख्या के गीत लुप्त हो गए हैं, आवश्यकता है उन्हें खंगालने की। हमारे पुराने ग्रंथ और पुस्तकों के अलावा दादी–नानी की उम्र की महिलाओं के श्रीमुख से सुनकर इन्हें लिपिबद्ध किया जाए।

– फैंसी बाजार, गुवाहाटी, 98649–18948

माहेश्वरी सभा श्रीरामपुर अंचल

युवक–युवती परिचय सम्मेलन

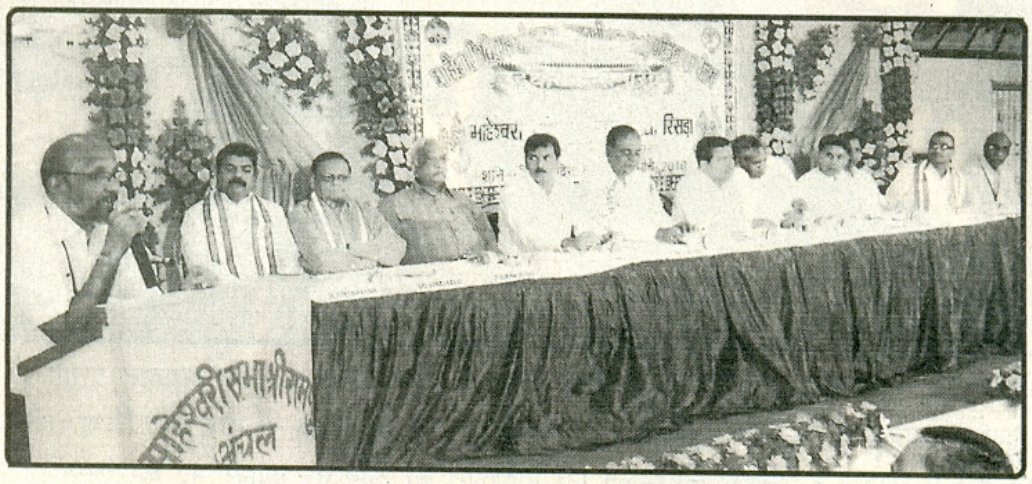

रिसड़ा : शनि–रविवार १३–१४ मार्च २०१० को माहेश्वरी सभा श्रीरामपुर अंचल, रिसड़ा द्वारा माहेश्वरी भवन में आयोजित ''परिचय सम्मेलन'' का उद्घाटन शनिवार दिनांक १३ मार्च २०१० को अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा श्रीयुत् रामपाल जी सोनी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

समारोह अध्यक्ष श्री रामकुमारजी भूतड़ा (अध्यक्ष, अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर) महासभा के अर्थमंत्री श्री दामोदर दासजी मूंदड़ा, संयुक्त मंत्री (पूर्वांचल) श्री घनश्यामजी करनानी, माहेश्वरी सभा कोलकाता के सभापति श्री पुरुषोत्तम दासजी मीमाणी, श्री गिरिराजधरण माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दरजी कासट, श्री जगमोहन दासजी पलोड़ एवं जगदीश चन्द्रजी एन. मुंदड़ा आदि अतिथियों ने भी कार्यक्रम को सराहनीय बताते हुए इसके सफलता की कामना की।

सभापति श्री देवकिशन करनानी ने स्वागत भाषण प्रेषित किया, संयोजक श्री रमेश काबरा ने आयोजन की विस्तृत जानकारी प्रदान की, मंत्री श्री हरीश काबरा ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। ट्रस्ट अध्यक्ष श्री रिखबदस डागा ने आभार ज्ञापित किया। अब तक ५ रिश्ते भी तय हो चुके है। कार्यक्रम का संचालन श्री विनोद लाहोटी ने किया।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी युवक–युवती परिचय सम्मेलन

युवक–युवतियों के अनुपात का अंतर बढ़ रहा उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, सम्बलपुर शाखा के तत्वाधान में दिनांक २६ एवं २७ दिसम्बर, २००९, को श्री अग्रसेन भवन में मारवाड़ी युवक–युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में प्राय: २६० विवाह योग्य युवक–युवतियों की प्रविष्टि आई थी। इनमें से एक जोड़े (नवीन एवं मंजू) ने विवाह बंधन में बंधना स्वीकार किया है। इस परिचय सम्मेलन में बंगाल, छतीसगढ, आंध्रप्रदेश, आदि से विवाह योग्य युवक युवतियाँ शामिल हुए थे।

परिचय सम्मेलन का उद्घाटन उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेन्दरजी लाठ के द्वारा किया गया। मंच में इस योजना के प्रभारी श्री मंगतूरामजी अग्रवाल, सम्बलपुर शाखा के अध्यक्ष श्री इंदरलालजी अग्रवाल, सचिव श्री चन्द्र कुमारजी सराफ के अलावा उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय महासचिव श्री बिजय कुमारजी केड़िया भी उपस्थित थे। मंच का संचालन उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सचिव श्री दिनेश कुमारजी अग्रवाल कर रहे थे। इस कार्यक्रम में सम्मेलन के सदस्यों सहित मारवाड़ी युवा मंच, बस्ती एवं खेतराजपुर शाखा, मारवाड़ी महिला समिति, बस्ती एवं खेतराजपुर शाखा, मायुमं नवचेतना शाखा, मा.म.समिति सृजन शाखा के सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा।

मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलनः

होली मिलन कार्यक्रम संपन्न

मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा विशाल होलिका दहन एवं होली मिलन कार्यक्रम अग्रवाल बारात घर शीतलपुरी में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में समाज के लगभग २५० परिवारों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। मारवाड़ी पहनावे में सम्मलित होने में लगभग ६० जोड़ों को (पुरूष एवं महिलाएं) को आर्कषक उपहार भेंट कर सम्मानित किया गया।

संगठन को मजबूती प्रदान करवाने के साथ हर क्षेत्र में उल्लेखनीय सहयोग प्रदान करने पर संस्था के वरिष्ठ सदस्य एवं उपाध्यक्ष श्री विनय अग्रवाल को शाल एवं श्रीफल द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में सर्वश्री कैलाश अग्रवाल,गणेश पुरोहित, पुरूषोत्तम संधी, कमलेश नाहटा, रमेश गर्ग, संतोष ओसवाल, सुभाष जिन्दल, प्रकाश अग्रवाल, अमित टीबडेवाल, मुकेश अग्रवाल, यतीश अग्रवाल, राजीव शुक्ला, चमन लाल अग्रवाल, पी. के. अग्रवाल, घनश्याम अग्रवाल सभी संस्था के पुरुष महिलाएं एंव बच्चों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

सिलीगुड़ीः

होली पर हरियाणा का खुड़का

सिलीगुड़ी– उत्तर बंगाल में पहली बार हरियाणा राजस्थान नागरिक परिषद के तत्वाधान में दो दिवसीय हरियाणा का खुड़का–होली का खुड़का रंगा–रंग कार्यक्रम उ.ब.मा.भवन में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन हुआ। सभी कलाकारों एवं मुख्य अतिथियों को हरियाणा की खण्डुंवा (साफा) पहना कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन क्रमशः श्री रतनलाल बंसल एवं श्री आर.के. गोयल ने दीप प्रज्वलित कर किया। सयोंजक सुरेश बंसल ने बताया कि हमारी हरियाणा संस्कृत के प्रचार–प्रसार एवं आने वाली पीढी को इससे अवगत कराना ही हमारा उद्देश्य है। हरियाणा संस्कृति ध ार्मिक–सामाजिक देश भक्ति शिक्षाप्रद ही नहीं अन्यों के लिये भी अनुकरणीय है।

कार्यक्रम के लिये हरियाणा से श्री बाली शर्मा एवं साथी तथा कम्पीटिसन किंग श्री आजाद सिंह खाण्डा एवं साथी, तथा हरियाणा की गायिका एवं डांसर नीलम चौधरी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था।

प्रपत्र–4

समाचार पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून १४४६ (संशोधित) के आठवें नियम के साथ पढी पाने वाली प्रेस तथा पुस्तक कानून की धारा १४डी उपधारा (बी) के अन्तर्गत समाज विकास (मासिक) कोलकाता, नामक समाचार पत्र से संबधित तथा स्वामित्व एवं अन्य बातों का ब्योरा :–

प्रकाशन का स्थान	: १५२बी, महात्मा गांधी रोड कोलकाता–७०००७
प्रकाशन की अवधि	: मासिक
मुद्रक का नाम	: श्री भानीराम सुरेका
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: ८, कैमक स्ट्रीट, कोलकाता–९
संपादक का नाम	: श्री नन्दकिशोर जालान
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: २६,अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता–६
मालिक	: अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन १५२बी, महात्मा गांधी रोड कोलकाता–७०००७

मैं भानीराम सुरेका घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

०७.०३.२०१० भानीराम सुरेका

प्रकाशक का हस्ताक्षर

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, March 2010
RNI Regd. No. 2868/68

।।श्री गणेशाय नमः।। ।। ॐ श्री श्याम देवाय नमः।। ।। श्री हनुमंते नमः।।

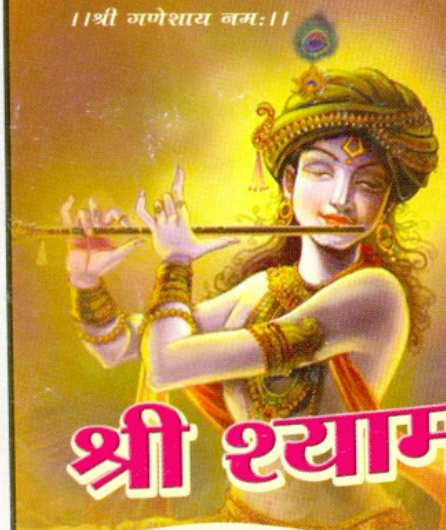

इस कलियुग में श्याम प्रभु की,
हो रही जय-जयकार ।
आलमबाजार में श्री श्याम मंदिर निर्माण का,
सपना हो रहा साकार.....

श्री श्याम मंदिर निर्माणार्थ

भूमि पूजन

स्थान
113,सूर्य सेन रोड,
आलमबाजार,कोल-35
(नारायणी सिनेमा के सामने)
दक्षिणेश्वर मंदिर से
2 मिनट की दूरी पर
दुरभाष:9831195501

श्रद्धेय आचार्य
श्री सुदामा जी महाराज (मदूरई)
के पावन सान्निध्य में

रविवार,16 मई 2010

भूमि-पूजन सुबह 9.15 बजे
भजन-अमृतवर्षा दोपहर 2 बजे से प्रभु इच्छा तक

सबको आमंत्रण | भव्य श्रृंगार | अखण्ड ज्योति | छप्पन भोग | भजन अमृतवर्षा | श्याम का खजाना | सबका स्वागत

विशेष : भारत के सुप्रसिद्ध कलाकारों द्वारा भजन-अमृतवर्षा

श्री श्याम गुण गाओ ।

आयोजक :

जीवन सुखमय बनाओ ।।

श्री श्याम ध्वजा मंडल आलमबाजार

निवेदक

देवेन्द्र जाजोदिया (ट्रस्टी) | संजय सुरेका (ट्रस्टी) | श्रवण कुमार धानुका (ट्रस्टी) | गणेश अग्रवाल (ट्रस्टी) | गोविन्द मुरारी अग्रवाल (ट्रस्टी एवं सचिव) | राजपाल गुप्ता (अध्यक्ष) | अजीत खेतान (संयोजक)

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com